بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

विशेषांक

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

सीरतुन्नबी अंक

अंक 33

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

22 ज़ुल्हज्जा 1441 हिज्री क़मरी 13 ज़ुहूर 1399 हिज्री शम्सी 13 अगस्त 2020 ई

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"ख़ाना क़ाबा ज़ाहरी रूप से सच्चे आशिक़ों के लिए एक नमूना बनाया गया है। और ख़ुदा ने फरमाया कि देखो यह मेरा घर है और यह हजरे अस्वद मेरे देहलीज़ (चौखट) का पत्थर है और इस तरह का आदेश इस लिए दिया कि ताकि इन्सान ज़ाहरी रूप पर अपने इश्क़ के जोश और मुहब्बत को प्रकट कर दे। अत: हज्ज करने वाले हज्ज के इस अवसर पर ज़ाहरी तौर पर उस घर के गिर्द घूमते हैं ऐसी अवस्था बना कर के मानो ख़ुदा की मुहब्बत में दीवाने और मस्त हैं।"

(चश्मा मअर्फत रूहानी ख़ज़ान भाग 23 पृष्ठ 100)

नाम उसका है मुहम्मद
दिलबर मेरा यही है

उर्दू मन्ज़ूम कलाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा,
नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है।

अनुवादः हमारा मार्गदर्शक वह है जिस से सारा प्रकाश है उस का नाम मुहम्मद है जो मेरा यही प्रियतम है

सब पाक हैं पयम्बर, इक दूसरे से बेहतर,
लेक अज़ ख़ुदाए बर तर खैरुल्वरा यही है।

अनुवादः समस्त नबी एक दूसरे से बेहतर हैं परन्तु ख़ुदा की क़सम सृष्टि में सर्वोत्तम यही है

पहलों से ख़ूबतर है, खूबी में इक क़मर है
उस पर हर इक नज़र है, बदरुदुजा यही है।

अनुवादः पहले लोगों से बहुत अच्छा है और अपनी ख़ूबी में चन्द्रमा सदृश्य है हर एक दृष्टि उस पर है और वह अन्धेरी रात का उजाला फैलाने वाला चन्द्रमा है

वह यारे लामकानी, वह दिलबरे निहानी,
देखा है हमने उस से बस रहनुमा यही है।

अनुवादः वह (अल्लाह तआला) उच्च आकाशों में है और दिल में छुपा हुआ है हम ने उसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से देखा है बस यही एक मार्गदर्शक है

वह आज शाहे दीं है, वह ताज मुर्सलीं है,
वह तय्यबो अमीं है उसकी सना यही है।

अनुवादः वह आज धर्म का सम्राट है वह नबियों का ताज है वह पवित्र तथा अमानत वाला है उस की प्रशंसा यही है।

उस नूर पर फ़िदा हूँ, उस का ही मैं हुआ हूँ,
वह है मैं चीज़ क्या हूँ, बस फ़ैसला यही है।

अनुवादः उस प्रकाश पर मैं कुर्बान हूं और मैं उस का ही हुआ हूं वही(सब कुछ) है मैं कुछ भी नहीं हूं बस फैसला यही है।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-20, क़ादियान के आर्य और हम, पृष्ठ-456)

❁❁❁

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर सीरतुन्नबी ﷺ नम्बर

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का

अपने सहाबा किराम रज़ि

से उत्तम व्यवहार

सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी जान और अपने माँ बाप की जान से भी ज़्यादा प्रिय रखते थे और हर समय आप पर फ़िदा होने के लिए तैयार रहते। अल्लाह और इस के रसूल से अधिक कोई दूसरी चीज़ उन्हीं प्रिय नहीं थी। और इस का नतीजा था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अपने सहाबा से बहुत अधिक मुहब्बत प्रेम और हमदर्दी का व्यवहार फ़रमाते। हर तरह से उनकी दिलजोई करते। आर्थिक सहायता फ़रमाते। अगर कोई कर्ज़ में होता तो उस के क़र्ज़ की अदायगी करते। नीचे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपने सहाबा से उत्तम व्यवहार की कुछ घटनाएं प्रस्तुत हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक निहायत मुख़लिस सहाबी हज़रत जाबिर रज़ि थे। उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह रज़ि बिन अमरो बिन हराम था। हज़रत जाबिर रज़ि के पिता अब्दुल्लाह जंग उहद में शहीद हुए। जंग उहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने सत्तर जान कुरबान करने वाले सहाबा का सदमा बर्दाश्त करना पड़ा जिस में आप के प्रिय चाचा हज़रत हमज़ा रज़ि भी शामिल थे। हदीस में आता है, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि ख़ुद रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझ से मिले। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुझे देखकर फ़रमाया हे जाबिर आज मैं तुम्हें परेशान और उदास क्यों देख रहा हूँ? मैंने निवेदन किया हुज़ूर मेरे पिता शहीद हो गए हैं और काफ़ी क़र्ज़ और बाल बचे छोड़ गए हैं। हज़ूर फ़रमाने लगे क्या मैं तुम्हें यह ख़ुशख़बरी न सुनाओं कि किस तरह तुम्हारे पिता की अल्लाह तआला के हुज़ूर सम्मान हुआ। मैंने अर्ज़ किया हाँ हुज़ूर ज़रूर सुनाएं । इस पर आप ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने अगर किसी से गुफ़्तगु की है तो हमेशा पर्दा के पीछे से की है लेकिन तुम्हारे बाप को ज़िन्दा किया और इस से आमने सामने गुफ़्तगु की और फ़रमाया मेरे बंदे मुझ से जो माँगना है मांग। मैं तुझे दूंगा। तुम्हारे पिता ने जवाब में निवेदन किया हे मेरे रब मैं चाहता हूँ कि तू ज़िन्दा कर के मुझे दोबारा दुनिया में भेज दे ताकि तेरे लिए दोबारा क़तल किया जाऊं। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह नहीं हो सकता क्योंकि मैं यह क़ानून लागू कर चुका हूँ कि किसी को मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर के दुनिया में नहीं लौटाऊंगा।

(तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफसीर, तफ़सीर सूरत आले इमरान, उद्धरित हदीकतुस्सादेक़ीन लेखक मलक सैफ़ुर्रहमान हदीस नम्बर 320)

हज़रत जाबिर रज़ि को उनके पिता अब्दुल्लाह ने कहा था कि अमुक यहूदी से लिया हुआ मेरा क़र्ज़ मेरी शहादत के बाद बाग़ के फल को बेच कर के अदा कर देना। हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाह अन्हो ने अपने पिता की वसीयत के अनुसार यहूदी का क़र्ज़ अदा कर दिया।

(ख़ुतबा जुम्अ: 30 मार्च 2018)

उस ज़माना में रिवाज था कि बागों और फसलों के बदला में कर्ज़ लिया जाता था। हज़रत जाबिर भी अपने खर्चों को पूरा करने के लिए कर्ज़ लेते थे। इसी तरह के एक कर्ज़ की घटना का वर्णन हदीस में मिलता है जो हज़रत जाबिर रज़ि ने एक यहूदी से लिया था। हज़रत जाबिर ने यहूदी से कहा कि इस साल बाड़ में आय कम हुई है इसलिए कर्ज़ की वसूली में आसानी दे दो। कुछ हिस्सा ले लो, अगले साल कुछ ले लो। लेकिन वे यहूदी किसी प्रकार की सुविधा देने के लिए तैयार नहीं हुआ। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बारे में पता चला। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूदी से सिफारिश की लेकिन वह नहीं माना। फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कैसे अपने इस सहाबी से कर्ज उतारने के सिलसिले में अनुकंपा फ़रमाई। दुआ की और अल्लाह तआला ने उस में कैसे फज़ल फरमाया। इसका उल्लेख रिवायतों में आता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ख़ुद रिवायत करते हैं कि मदीना में एक यहूदी था जो मेरे खजूरों के बाग़ का नया फल तैयार होने तक मुझे कर्ज़ दिया करता था। मेरी यह भूमि रोमा नामक कुएं वाली सड़क पर स्थित थी। एक बार साल बीत गया लेकिन फल कम लगा और पूरी तरह तैयार भी नहीं हुआ। फल के पकने के मौसम में वह यहूदी आदत के अनुसार अपना कर्ज़ लेने आ गया जबकि उस साल मैंने कोई फल नहीं तोड़ा था। कहते हैं कि मैंने उससे और अधिक एक साल की मोहलत मांगी लेकिन उसने मना कर दिया। उसकी नीयत थी कि इस तरह शायद यह पूरे का पूरा बाग़ मेरे अधिकार में आ जाए। तो इस घटना की खबर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुई तो आप ने सहाबा से कहा कि चलो हम यहूदी से जाबिर के लिए मोहलत मांगते हैं। यह कहते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ सहाबा के साथ मेरे बगीचे में तशरीफ़ लाए और यहूदी से बात की। लेकिन यहूदी ने कहा। हे अबुल कासिम! मैं इसे राहत नहीं दूंगा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित किया। यहूदी का यह रवैया देखकर आप ने खजूर के पेड़ों में एक चक्कर लगाया फिर आकर यहूदी से बात की। लेकिन उस ने फिर से इन्कार कर दिया। कहते हैं इस दौरान मैं बाग़ से कुछ खजूर तोड़कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश कीं जो आप ने खाईं। फिर फरमाया जाबिर यहाँ तुम्हारा जो बागों में छप्पर सा होता है आराम करने की जगह होती है वह कहाँ है? मैंने बताया तो आपने फ़रमाया कि मेरे लिए वहाँ चटाई बिछा दो ताकि मैं कुछ देर आराम करूं। जाबिर कहते हैं मैंने आदेश का पालन किया।

शेष पृष्ठ 19 पर

विषय सूची

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	सम्पादकीय एवं विषय सूची	1
2	आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महान स्थान क़ुरआन मजीद और हदीसों के आलोक में	2
3	आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब अंबिया से बढ़ कर हैं।	3
4	सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का 44 वें जलसा सालाना जमाअत अहमदिया जर्मनी 5 से 7 जुलाई 2019 स्थान कार्ल्सरोए के समापन इज्लास से सम्बोधन	4
5	आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सर्वोत्तम रसूल, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफा सानी	11
6	आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जीवन चरित्र हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए	16

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महान स्थान कुरआन मजीद तथा हदीसों की रोशनी में

आप की बैअत अल्लाह तआला की बैअत है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ

(सूर: अलफतिह- 11)

अनुवाद: निसन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है

आप का कर्म ख़ुदा का कर्म है।

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○ (अन्फाल 18)

अनुवाद: और (हे मुहम्मद)जब तूने (उनकी तरफ़ कंकर)फेंके तो तूने नहीं फेंके बल्कि अल्लाह है जिसने फेंके। और यह इसलिए हुआ कि वह अपनी तरफ़ से मोमिनों को एक अच्छी आज़माईश में डाले। निसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला और स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

आप(स)की इताअत अल्लाह इताअत है

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ○ (अन्निसा 81)

अनुवाद: जो इस रसूल की पैरवी करे तो उसने अल्लाह की पैरवी की और जो फिर जाए तो हमने तुझे उन पर मुहाफ़िज़ बना कर नहीं भेजा

आप(स) क़ाब कौसैन

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى (सूरह अन्नजम 10)

अनुवाद: अत: वह दो क़ौसों के वतर क़ी तरह हो गया या इस से भी निकटतम।

साक्षात नूर

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا

(अन्निसा 175)

अनुवाद: हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी हुज्जत आ चुकी है और हमने तुम्हारी तरफ़ एक रोशन कर देने वाला नूर उतारा है।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ

(अलमाइदा 16)

अनुवाद: हे अहले किताब! निसन्देह तुम्हारे पास हमारा वह रसूल आ चुका है जो तुम्हारे सामने बहुत सी बातें जो तुम (अपनी)किताब में से छुपाया करते थे ख़ूब खोल कर वर्णन कर रहा है। और बहुत सी ऐसी हैं जिनसे वह सर्फ़ नज़र कर रहा है। निसन्देह तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आ चुका है। और एक रोशन नूर भी।

अल्लाह के नूर के अज़ीमुश्शान द्योतक

نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ۬ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۬ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۬ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

अनुवाद: यह नूर पर नूर है। अल्लाह अपने नूर की तरफ़ जिसे चाहता है हिदायत देता है और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण वर्णन करता है और अल्लाह हर चीज़ का स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निहायत हमदर्द , नर्म मिज़ाज और दयालु तबीयत के मालिक थे

عَنْ اَبِىْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَعْلِفُ الْبَعِيْرَ وَيُقِيْمُ الْبَيْتَ وَيَخْصِفُ النَّعْلَ وَيَرْقَعُ الثَّوْبَ وَيَحْلِبُ الشَّاةَ وَيَأْكُلُ مَعَ الْخَادِمِ وَيَطْحَنُ مَعَهٗ اِذَا أَعْيَا وَكَانَ لَا يَمْنَعُهُ الْحَيَاءُ اَنْ يَحْمِلَ بِضَاعَتَهٗ مِنَ السُّوْقِ اِلٰى اَهْلِهٖ وَكَانَ يُصَافِحُ الْغَنِيَّ وَالْفَقِيْرَ وَيُسَلِّمُ مُبْتَدِيًا وَلَا يَحْتَقِرُ مَا دُعِىَ اِلَيْهِ وَلَوْ اِلٰى حَشْفِ التَّمْرِ وَكَانَ هَيِّنَ الْمُؤْنَةِ لَيِّنَ الْخُلُقِ كَرِيْمَ الطَّبِيْعَةِ جَمِيْلَ الْمُعَاشَرَةِ طَلِقَ الْوَجْهِ بَسَّامًا مِنْ غَيْرِ ضِحْكٍ مَحْزُوْنًا مِنْ غَيْرِ عُبُوْسَةٍ مُتَوَاضِعًا مِنْ غَيْرِ مَذَلَّةٍ جَوَّادًا مِنْ غَيْرِ سَرَفٍ رَقِيْقَ الْقَلْبِ رَحِيْمًا بِكُلِّ مُسْلِمٍ لَمْ يَتَجَشَّأْ قَطُّ مِنْ شَبَعٍ وَلَمْ يَمُدَّ يَدَهٗ اِلٰى طَمَعٍ۔

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जीवन बड़ा सरल था। आप किसी काम को बुरा नहीं समझते थे। अपने ऊंट को ख़ुद चारा डालते। घर के काम काज करते। अपनी जूतियों की मरम्मत कर लेते। कपड़ों को पैच लगा लेते। बकरी दोह लेते। सेवक को अपने साथ बिठा कर खाना खिलाते। आटा पीसते पीसते अगर वह थक जाता में तो इस मदद करते। बाज़ार से घर का सामान उठाकर लाने में शर्म महसूस नहीं करते अमीर ग़रीब प्रत्येक से हाथ मिलाते। सलाम में पहल करते अगर कोई मामूली खजूरों की भी दावत देता तो आप उसे छोटा न समझते और स्वीकार करते। आप अत्यधिक हमदर्द, कोमल स्वभाव और नर्म प्रकृति के थे। आपका रहन सहन बड़ा साफ सुथरा था। मुस्करा कर पेश आते। मुस्कराहट आपके चेहरे पर झलकती रहती। आप ज़ोर का ठहाका लगाकर नहीं हँसते थे। ख़ुदा तआला के डर से चिंतित रहते लेकिन कठोर बोलना और सूखापन न था। विनम्र प्रकृति के थे लेकिन इस में किसी कमज़ोरी, पस्त हिम्मती का चिन्ह तक न था। बड़े उदार (खुले हाथ के) पर बिना कारण खर्च से हमेशा बचते। नरम दिल, रहीम व करीम थे। हर मुसलमान से मेहरबानी से पेश आते। इतना पेट भर कर न खाते कि डकार लेते रहें। कभी लालच और लोभ की भावना से हाथ न बढ़ाते बल्कि सब्र करने वाले व शुक्र करने वाले और कम पर सन्तोष करने वाले थे।

(असदुल ग़ाबह भाग प्रथम पृष्ठ 29, कशीरिया पृष्ठ 75, अलशिफ़ा भाग

☆ ☆ ☆

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी भीतरी पवित्रता व स्वच्छ हृदय, नेकी व लज्जा सच्चाई तथा सफाई, भरोसा एवं वफा, और इलाही इश्क के समस्त अनिवार्य बातों में सब अम्बिया से बढ़ कर हैं

उच्च स्तर का एक रूप पवित्र नबी

हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दृष्टि डालने से यह बात अत्यन्त स्पष्ट, प्रत्यक्ष और प्रकाशमान है कि आँहज़रत उच्चतम श्रेणी के एक वर्ण, निश्छल, ख़ुदा के लिए उत्साही और जान पर खेलने वाले प्रजा की उम्मीद और आशा से बिल्कुल विमुख तथा ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे, जिन्होंने ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फना होकर इस बात की कुछ भी परवाह न की कि एकेश्वरवाद की घोषणा करने से मेरे सिर पर क्या-क्या विपत्ति आएगी तथा मुश्रिकों के हाथ से क्या कुछ कष्ट और दुख उठाना होगा अपितु समस्त कठिनाइयों, कठोरताओं तथा विपत्तियों को अपने ऊपर लेकर अपने ख़ुदा की आज्ञा का पालन किया तथा जो-जो शर्त तपस्या, उपदेश और नसीहत की होती है वह सब पूरी की और किसी डराने वाले को कुछ भी महत्त्व न दिया। हम सच-सच कहते हैं कि समस्त नबियों की घटनाओं में ऐसे भयंकर स्थान और अवसर और फिर ख़ुदा पर ऐसा भरोसा करके शिर्क और सृष्टि-पूजा से प्रत्यक्ष और स्पष्ट तौर पर मना करने वाला, इतना प्रकाशमान, और फिर कोई ऐसा दृढ़ प्रतिज्ञ और साहसी एक भी सिद्ध नहीं। अत: थोड़ी ईमानदारी से विचार करना चाहिए कि ये समस्त परिस्थितियां आँह-ज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आन्तरिक सच्चाई को सिद्ध कर रही है सिवाए इसके कि जब बुद्धिमान व्यक्ति इन परिस्थितियों पर और भी विचार करे कि वह युग कि जिसमें आँहज़रत अवतरित हुए वास्तव में ऐसा युग था कि जिसकी वर्तमान स्थिति एक बुज़ुर्ग और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ख़ुदाई सुधारक और आकाशीय पथ-प्रदर्शक की नितान्त मुहताज थी। तथा जो-जो शिक्षा दी गई वह भी वास्तव में सच्ची और ऐसी थी कि जिसकी अत्यन्त आवश्यकता थी, और उन समस्त मामलों की संग्रहीता थी कि जिस से युग की समस्त आवश्य-कताएँ पूर्ण होती थीं फिर उस शिक्षा ने प्रभाव भी ऐसा कर दिखाया कि लाखों हृदयों को सत्य और ईमानदारी की ओर खींच लाई और लाखों सीनों पर ला इलाहा इल्लल्लाह का निशान अंकित कर दिया और नुबुव्वत का मूल उद्देश्य होता है अर्थात् मुक्ति के सिद्धान्तों की शिक्षा को ऐसे कमाल तक पहुँचाया जो किसी अन्य नबी के हाथ से किसी युग में नहीं हुआ। इन घटनाओं पर दृष्टि डालने पर हृदय से सहसा यह गवाही जोश के साथ निकलेगी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवश्य ख़ुदा की ओर से सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं। जो व्यक्ति द्वेष और हठधर्मी से इन्कारी हो उस का रोग तो असाध्य है चाहे वह ख़ुदा से ही इन्कारी हो जाए वरना ये सारे सच्चाई के चिन्ह जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पूर्णता से जमा हैं किसी अन्य नबी में कोई एक तो प्रमाणित कर के दिखाए ताकि हम भी जानें।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 111)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च तथा बुलन्द शान

"हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चाई के प्रकट करने के लिए एक मुजद्दिद-ए-अज़ाम (महान सुधारक) थे , जो लुप्त हो चुकी सच्चाई को दोबारा संसार में लाए। इस गर्व में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई भी नबी भागीदार नहीं क्योंकि आपने सारे संसार को एक अंधकार में पाया और फिर आप के प्रकट होने से वह अंधकार प्रकाश में बदल गया। जिस क़ौम में आप प्रकट हुए , आपकी मृत्यु न हुई , जब तक कि उस सारी क़ौम ने शिर्क (अने-कश्वरवाद) का चौला उतारकर ऐकेश्वरवाद का वस्त्र धारण न कर लिया तथा केवल इतना ही नहीं बल्कि वे लोग ईमान के श्रेष्ठ मर्तबा को पहुँच गए तथा सच्चाई और वफ़ा तथा विश्वास के ऐसे कार्य उनके द्वारा प्रकट हुए कि जिसका उदाहरण संसार के किसी भाग में नहीं पाया जाता। यह सफलता तथा इतनी बड़ी कामयाबी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा और अन्य किसी नबी को प्राप्त नहीं हुई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत पर यही एक बड़ी दलील है कि आप एक ऐसे समय में प्रकट तथा तशरीफ़ लाए जबकि ज़माना अत्याधिक अंधकार में पड़ी हुआ था तथा स्वाभाविक रूप से एक महान मुस्लेह (सुधारक) का इच्छुक था । फिर आप ऐसे समय में परलोक सिधारे जबकि लाखों लोग अनेकश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा को छोड़ कर एकेश्वरवाद तथा सीधे रास्ते को ग्रहण कर चुके थे । वास्तव में यह पूर्ण सुधार आप के साथ ही विशिष्ट था कि आपने एक जंगली स्वभाव तथा पशु प्रकृति वाली क़ौम को मनुष्य के स्वभाव सिखाए। अथवा दूसरे शब्दों में इस तरह कहें कि पशुओं को इन्सान बनाया। और फिर इन्सानों से शिक्षित इन्सान फिर शिक्षित इन्सानों से बा ख़ुदा (ख़ुदा वाले) इन्सान बनाया, तथा रूहानियत की अवस्था उनमें पैदा कर दी तथा सच्चे ख़ुदा के साथ उनका सम्बन्ध पैदा कर दिया। ख़ुदा के रास्ता में बकरियों की तरह उनका कत्ल किया गया तथा चूँटियों की तरह पैरों में कुचले गए परन्तु ईमान को हाथ से न छोड़ा बल्कि प्रत्येक मुसीबत में आगे क़दम बढ़ाया। अत: नि:सन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूहानियत क़ायम करने की दृष्टि से द्वितीय आदम थे, बल्कि वास्तविक आदम वही थे जिनके द्वारा तथा इसी कारण ही समस्त मानवीय सद-गुण अपनी पूर्णता को पहुँचे तथा सारी उत्तम शक्तियां अपने कार्य में लग गईं तथा मानवीय प्रकृति (फ़ितरत) की कोई भी शाखा फल तथा फूलों के बिना न रही। अत: ख़त्मे नुबुव्वत न केवल आपके ज़माने के आख़िर पर आने के कारण (पूर्ण) हुआ अपितु इस कारण भी कि सम्पूर्ण नुबुव्वत कमालात आप पर पूरे हो गए और चूँकि आप अल्लाह तआला की सिफ़ात (गुणों) का सम्पूर्ण प्रतिरुप थे, इस लिए आपकी शरीअत जलाली व जमाली (प्रतापी व करुणामयी) दोनों गुणों से परिपूर्ण थी। इसी उद्देश्य से आपके दो नाम मुहम्मद तथा अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और आपकी नुबुव्वते आम: (शरीअत) में कंजूसी का कोई हिस्सा नहीं बल्कि वह शुरू से ही सारे संसार के लिए है।"

(लैक्चर स्यालकोट रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 206)

दुनिया की बक़ा के लिए आज जिस चीज़ की ज़रूरत है वह इस्लाम ही है।

दुनिया को इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा से परिचित कराने के लिए हर अहमदी को अपनी भूमिका अदा करने की ज़रूरत है।

नबी अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र आदर्श से इस्लाम की असल शिक्षाओं का वर्णन।

जमाअत अहमदिया को हुज़ूर की मुबारक सीरत का अनुकरण करते होते हुए दुनिया को इस्लाम का असल चेहरा पेश करने की नसीहत

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुपमीय उत्तम अख़लाक़ , अल्लाह तआला की इबादत , नमाज़ बाजमाअत की पाबन्दी, अल्लाह तआला पर भरोसा, विनम्रता, एहसानमंदी और शुक्रगुज़ारी , अमानत और वादा की पाबन्दी , मध्य मार्ग और हुज़ूर के हुस्न का दिल को छूने वाला वर्णन।

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि इस सम्पूर्ण नबी की उम्मत में आने का हक़ अदा करने वाले हूँ और ख़ूबसूरत और रोशन चेहरे को दुनिया के सामने पेश कर के दुनिया के अंधेरों को दूर करने वाले बनें , अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

44 वें जलसा सालाना जमाअत अहमदिया जर्मनी आयोजित 5 से 7 जुलाई 2019 स्थान कार्ल्सरोए के समापन इज्लास से

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक और दिल को छूने वाला ख़िताब।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا۔

(अल्लाहज़: 22)

निसन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक नमूना है हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता है और बहुत अधिक अल्लाह को याद करता है।

ग़ैर मुस्लिम दुनिया या पश्चिमी दुनिया या तरक़्क़ी करने वाली दुनिया में जो मुसलमानों के बारे में शंकाऐं पाई जाती हैं वे उनकी इस्लामी शिक्षा के बारे में कम इल्म के कारण से अधिक हैं और इस पर कई मुसलमानों के इस्लाम के नाम पर कट्टर कार्य और दहश्तगर्दी और क़ानून को अपने हाथ में लेने के काम ने और अधिक उनके ज़हनों में दृढ़ कर दिया है कि इस्लाम है ही दहश्तगर्दी का मज़हब। आज इस्लाम की शिक्षा को दुनिया में फैलाने और इस्लामी शिक्षा के बारे में ग़लत विचारों को समाप्त करने का काम अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम मसीह मौऊद और महदी मौऊद की जमाअत के सपुर्द किया है। अत: इस के लिए हर अहमदी को भरपूर कोशिश करने की ज़रूरत है। दुनिया के लोग तो प्रैस और मीडिया की ख़बरों को सुनकर समझते हैं कि जो ये कह रहे हैं अर्थात जो प्रैस कह रहा है वही शत प्रतिशत सच है। मज़हब से दिलचस्पी वैसे ही प्राय दुनिया की अक्सर आबादी को नहीं है। अत: इन हालात में बड़ी सख़्त मेहनत से और निरन्तर कोशिश से इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को दुनिया को बताना एक बहुत बड़ा चैलेंज है। आम ग़ैर मुस्लिम तो यही समझता है कि मुसलमानों के ये कर्म उनकी शिक्षा के कारण से हैं और इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कर्म के कारण से मुसलमानों के ये कर्म हैं।

अत: जैसा कि मैंने कहा इस प्रभाव को नष्ट करने और दुनिया को इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा से परिचित करने के लिए हर अहमदी को अपनी भूमिका अदा करने की ज़रूरत है। अपनी कथनी और करनी से दुनिया को बताने की ज़रूरत है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कर्म क्या है। अल्लाह तआला ने जो दुनिया में इन्सान को पैदा किया है तो इसलिए कि वह ख़ुदा तआला की इबादत के हक़ भी अदा करे और बंदों के हक़ भी अदा करे। जो अल्लाह का हक़ अदा करने वाले होंगे निसन्देह बंदों का हक़ अदा करने वाले भी होंगे और उन हुक़ूक़ की अदायगी के लिए अल्लाह तआला ने हमारे सामने अपने प्यारे और महबूब नबी और अनुकरण योग्य और सम्पूर्ण इन्सान का नमूना रखा है। और फिर हमें यह कहा कि यह सम्पूर्ण नमूना तुम्हारा रहनुमा है उसे अपनाओ जो उस की उम्मत में होने का दावा करते हैं। इस आदर्श के हर पहलू पर अनुकरण करने की कोशिश करो और फिर दुनिया को भी बताओ कि वास्तविक इस्लाम यह है न कि वह इस्लाम जो कुछ दहश्तगर्द इस्लाम के नाम पर पेश करते हैं और जिसको पश्चिमी मीडिया और ज़्यादा बढ़ा चढ़ा कर वर्णन करता है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने कैसी-कैसी ख़ूबसूरत मिसालें अपने आदर्श से पेश फ़रमाई हैं उनके कुछ पहलू मैं इस समय पेश करूँगा ताकि हम अपने आपको उन नमूनों पर परखें और उच्च अख़लाक़ की रोशनी में जो आप(स) ने हमें नसीहत फ़रमाई है इस का व्यावहारिक ज़िन्दगी में समीक्षा करें। इस्लामी शिक्षा की रोशनी में जो आप(स) ने हमें हिदायतें दी हैं उनका जायज़ा लें, जो नमूने दिखाए हैं उनके अनुसार अपने आपको देखें। जब हम उसके अनुसार अपने जीवन ढालेंगे तभी दुनिया को बता सकते हैं कि वास्तव में इस्लाम चीज़ क्या है और दुनिया की स्थिरता के लिए आज जिस चीज़ की ज़रूरत है वह इस्लामी शिक्षा ही है। अल्लाह तआला ने इन्सानी ज़िन्दगी का वास्तविक उद्देश्य तो इबादत क़रार दिया है। हमारे आक़ा ने हमें सिर्फ यह नहीं कहा कि अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि तुम्हारी ज़िन्दगी का उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत है इसलिए इबादत की तरफ़ हर मोमिन को ध्यान करना चाहिए और वह इस उद्देश्य को प्राप्त करने की कोशिश करे, बल्कि आपने अपनी इबादत के स्तर क़ायम कर के हमारे सामने पेश किए हैं जिनकी क़बूलीयत की सनद भी अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमाई है।

जैसा कि अल्लाह फ़रमाता है

الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ۔ وَتَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ

(अश्शुअरा 219-220)

अर्थात जो देख रहा होता है जब तू खड़ा होता है और सिज्दा करने वालों में तेरी व्याकुलता भी। अत: यह है आप(स) के सिज्दों और इबादत की हालत कि व्याकुलता में इस क़दर बढ़े हुए हैं कि अल्लाह तआला अपने प्यार की नज़र डाल कर खासतौर पर आप(स) की इस इबादत और व्याकुलता का वर्णन फ़र्मा रहा है। यह व्याकुलता किस लिए थी ,किस के लिए थी? यह व्याकुलता और दुआएं अपनी उम्मत के लिए थीं। यह व्याकुलता और दुआएं इन्सानियत के लिए थीं। यह व्याकुलता और दुआएं उन लोगों के अपने जन्म के उद्देश्य के समझने के लिए थीं जो अल्लाह तआला से दूर हैं क्योंकि यह दूरियाँ अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बना सकती हैं इसलिए आप(स) की इस बेक़रारी को देखकर अल्लाह तआला ने आप(स) को यह भी फ़रमाया

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا یَكُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ

(अश्शुअरा 4)

क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वे क्यों मोमिन नहीं होते। तेरा दिल इस बात पर बेचैन है कि काफ़िर क्यों हिदायत नहीं पाते, क्यों ख़ुदा तआला पर ईमान ला कर अपनी दुनिया तथा परलोक नहीं सँवारते। अत: जहां आप(स) की इबादत के स्तर का पता चलता है यहां इस से, वहां इस से आप(स) के पवित्र दिल की इस हालत का भी पता चलता है जो इन्सानियत को तबाही से बचाने के लिए आप(स) के दिल में थी। जो आप(स) का दर्द था उस का भी पता चलता है। अत: जिसके दिल में इन्सानियत के लिए दर्द की यह अवस्था हो वह क्या कभी ज़ुलम कर सकता है? निसन्देह नहीं। आप(स) ने तो ख़ुदा तआला की इबादत और इस की सृष्टि की सेवा और इस के लिए दर्द में ज़िन्दगी का हर क्षण क़ुर्बान किया। आप(स) की इबादत की कैफ़ीयत को देखने का कई बार सहाबह रज़ि को भी मौक़ा मिल जाता था। एक सहाबी रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखा। इस वक़्त रोने की अधिकता के कारण से आप(स) के सीने से ऐसी आवाज़ें निकल रही थीं जैसे चक्की के चलने की आवाज़ होती है।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सलात हदीस 904)

ये दुआएं क्या थीं? ये अल्लाह तआला की पनाह में रहने की दुआएं थीं। ये उम्मत के लिए दुआएं थीं। ये इन्सानियत को तबाही से बचाने के लिए दुआएं थीं। ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं ही थीं जिन्होंने उस समय भी इन्क़िलाब पैदा किया और सदियों के मुर्दे ज़िन्दा हो कर अल्लाह तआला के वास्तविक आबिद बन गए और ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं ही हैं जिन्होंने क़बूलीयत का दर्जा पाते हुए इस ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को इस बिगड़े हुए ज़माना में इस्लाम के पुनरुद्धार के लिए भेजा है। अत: आज यह हम अहमदियों की ज़िम्मेदारी है कि अपनी इबादतों के स्तर बुलंद करें। ख़ुदा तआला के हुज़ूर इस आचरण पर चलने की कोशिश करते हुए वे सज्दे करें जो केवल हमारे व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए न हों बल्कि अल्लाह तआला की हुकूमत को दुनिया में क़ायम करने के लिए हों। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा दुनिया में लहराने के लिए हों। अपने आपको अल्लाह तआला का वास्तविक बन्दा बनाने के लिए हों। इन्सानियत को अपने पैदा करने वाले ख़ुदा के क़रीब लाने के लिए हों। दुनिया को तबाही से बचाने के लिए हों।

फ़र्ज़ और बाजमाअत नमाज़ों के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कितना ध्यान बल्कि कई हालात में कहना चाहिए कष्ट फ़रमाते थे उस का इस एक घटना से ख़ूब अंदाज़ा हो सकता है। जंग उहद की शाम जब लोहे के ख़ुद की कड़ियाँ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाहने गाल में टूट गईं तो इस के कारण से आप(स) का बहुत ख़ून बह चुका था। आप(स) ज़ख़्मों से निढाल थे। इस के अतिरिक्त सत्तर सहाबा की शहादत का ज़ख़्म इस से कहीं ज़्यादा कष्टदायक था। इस रोज़ भी आप(स) आज़ान की आवाज़ पर इसी तरह नमाज़ फ़ज्र के लिए तशरीफ़ लाए, जिस तरह आम दिनों में तशरीफ़ लाते थे।

(उद्धरित उस्वा इन्साने कामिल ,पृष्ठ 84)

और आप(स) का यही कर्म था जिसने सहाबा रज़ि में भी इबादतों के स्तर क़ायम कर के दिखाए।

अत: आज हम में से हर एक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि क्या जब हम यह नारा लगाते हैं कि अब मसीह मौऊद की जमाअत के माध्यम से इस्लाम का पुनर्जागरण होना है, हम हैं जिन्होंने इस्लाम की शिक्षा को दोबारा ज़िन्दा करना है, क्या हमारी इबादतों और बाजमाअत नमाज़ों के स्तर उस के क़रीब भी हैं? ज़रा सी तकलीफ़ पर मस्जिद न आने के बहाने होते हैं। सुबह उठकर दो छींकें आ जाएं तो कह देते हैं कि आज तबीयत ख़राब है नमाज़ घर में पढ़ लो। सुस्तियाँ तो कोशिश करने से दूर होती हैं। अत: हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम भी अपनी इबादतों के स्तर बुलंद करने की कोशिश करें। ये वे दुआएं ही हैं जो दुनिया में इन्क़िलाब का इस ज़माने में माध्यम बनेंगी। हमारी तब्लीग़ बग़ैर दुआओं के बे-नतीजा है। हमारी इल्मी कोशिशें दुआओं के बिना बे-नतीजा हैं। अत: अगर दुनिया को वास्तविक इस्लाम सिखाना है तो सबसे पहले हमें ख़ुदा तआला से इस स्तर का सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श के अनुकरण में चलते हुए क़ायम किए थे और जिसका नक़्शा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस तरह खींचा है फ़रमाते हैं कि"मोटी सी बात है कि क़ुरआन मजीद ने उनकी पहली हालत का तो यह नक़्शा खींचा है یَأْكُلُوْنَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ (मुहम्मद13) अर्थात वे इस तरह खाते हैं जिस तरह जानवर खा रहे हैं।" ये तो उनकी कुफ़्र की हालत थी। फिर जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र प्रभावों ने उनमें तब्दीली पैदा की तो उनकी यह हालत हो गई। یَبِیْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِیَامًا (अलफ़ुर्कान 65)अर्थात वे अपने रब के हुज़ूर सिज्दा करते हुए और क़ियाम करते हुए रातें काट देते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 9 पृष्ठ 145)

अत: यह वह हालत है जो हमें भी अपने अंदर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए न यह कि फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त भी उठने में सुस्ती दिखाएं। हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसीयत और आख़िरी पैग़ाम जबकि आप(स) जान निकलने की हालत में थे और सांस उखड़ रहा था यह था कि नमाज़ और ग़ुलाम के हुक़ूक़ का ध्यान रखना।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल वासाया, हदीस 2698)

यह है अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने और सृष्टि का हक़ अदा करने की आप(स) की कैफ़ीयत और यह वह आख़िरी नसीहत है जिसको एक मोमिन को हमेशा सम्मुख रखना चाहिए और यही हमारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का मक़सद है जिसे हमें हमेशा सामने रखना चाहिए न कि सुस्तियों और दुनियावी व्यस्तता में डूब कर अपनी ज़िन्दगी के उद्देश्य को भी नष्ट करें।

फिर अल्लाह तआला पर भरोसा की अवस्था है तो इस बारे में भी आप(स) के नमूने उच्च हैं। अल्लाह तआला का यह फ़रमान है कि وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِیْلًا (अन्निसा: 82) अर्थात और अल्लाह पर तवक्कुल कर और अल्लाह ही कारसाज़ के तौर पर काफ़ी है। तो फिर आप(स) की ज़िन्दगी में हर अवसर पर ये आदर्श हमें नज़र

आते हैं बल्कि मौत की बीमारी के समय भी आप(स) को इस चीज़ की फ़िक्र थी कि कहीं ऐसा न हो कि ऐसी हालत में मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो जाऊं जिसमें ज़रा सा भी अल्लाह तआला पर तवक्कुल न करने की शंका पैदा हो सकती हो। अत: हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि मेरे पास आप(स) ने सात या आठ दीनार रखवाए। आख़िरी बीमारी में फ़रमाया कि आयशा रज़ि !वह सोना जो तुम्हारे पास था क्या हुआ? हज़रत आयशा रज़ि कहती हैं मैंने अर्ज़ किया कि वह मेरे पास है। आप ने फ़रमाया आयशा वह सदक़ा कर दो। फिर हज़रत आयशा रज़ि किसी काम में व्यस्त हो गईं। फिर आप को जब दोबारा होश आई तो पूछा कि वह सदक़ा कर दिया? हज़रत आयशा रज़ि ने जवाब दिया कि अभी नहीं किया। आप(स) ने उनको भेजा कि जाओ अभी जाओ और मेरे पास ले के आओ। आप(स) ने वह दीनार मंगवा कर अपने हाथ पर रखकर गिने और फिर फ़रमाया मुहम्मद (सल्लल्लाहो अल्लाह वसल्लम) का अपने रब पर क्या तवक्कुल हुआ अगर ख़ुदा से मुलाक़ात और दुनिया से विदा होते समय ये दीनार उस के पास हों। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वे दीनार सदक़ा कर दिए।

(अत्तबकातुल कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 183 अल-कुतुब अल्इलमिया बेरूत1990 ई)

लेकिन दूसरों को आप(स) ने यह नसीहत फ़रमाई कि मैं तो अल्लाह तआला का नबी और महबूब हूँ यह मेरे साथ सुलूक है। अल्लाह तआला पर तुम तवक्कुल भी करो लेकिन अपनी औलाद को ग़रीबी और परेशानी से बचाने के लिए उन के लिए अगर तुम्हारे पास कोई जायदाद है या कोई रक़म है तो छोड़कर जाओ। 1/3 हिस्सा से ज़्यादा की वसीयत की इजाज़त नहीं दी।

(सही अल-बुख़ारी, किताबुल वसाया ,हदीस 2742)

और अल्लाह तआला ने इसलिए क़ुरआन करीम में विरासत का तरीक़ भी विस्तार से बता दिया लेकिन साथ ही आप(स) ने ये भी फ़रमाया कि इब्ने आदम के दिल की हर वादी में एक घाटी होती है, हर इन्सान के दिल में एक घाटी है, एक वादी है और जिसका दिल इन सब घाटियों के पीछे लगा रहता है तो अल्लाह तआला उस की परवाह नहीं करता कि कौन सी वादी उस की हलाकत का कारण बनती है और जो अल्लाह तआला पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह उसे इन सब घाटियों से बचा लेता है।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल ज़ुहद हदीस 4166)

अत: इस्लाम दुनिया के कामों की भी इजाज़त देता है लेकिन रात-दिन सिर्फ जायदादें बनाने और दुनिया के कामों में लगे रहने से मना करता है और बुनियादी चीज़ जिसकी तरफ़ ध्यान दिलाता है वह अल्लाह तआला की इबादत और उस पर तवक्कुल है और जब यह हो तो दुनियावी मुश्किलों से भी इन्सान बच जाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मत को अल्लाह तआला पर तवक्कुल करने की नसीहत करते हुए फ़रमाया अगर तुम अल्लाह पर तवक्कुल करो जिस तरह कि इस पर तवक्कुल करने का हक़ है तो वह तुम्हें ज़रूर इस तरह रिज़्क़ देगा जिस तरह परिंदे को देता है। जो सुबह ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भर कर लोटते हैं।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल ज़ुहद, हदीस 4164)

अत: यह बात हमें इस तरफ़ हमेशा ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि रिज़्क़ ख़ुदा तआला की तरफ़ से ही आता है और उसके हुसूल के लिए हमें अपनी इबादतों को क़ुर्बान नहीं करना चाहिए। काम ज़रूर हों लेकिन असल तवक्कुल अल्लाह तआला की ज़ात पर हो और काम के लिए इबादतें क़ुर्बान न हों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तवक्कुल के बारे में एक जगह हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रत ख़ातमुल अंबिया की घटनाओं पर नज़र करने से यह बात स्पष्ट और रोशन है कि आँहज़रत उच्च दर्जा के एक रंग रखने वाले और स्वच्छ हृदय और ख़ुदा के लिए जान कुरबान करने और लोगों पर आशाओं से बिलकुल मुँह फेरने वाले और केवल ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे। कि जिन्होंने ख़ुदा की इच्छा और मर्ज़ी में फ़ना हो कर इस बात की कुछ भी परवाह न की कि तौहीद की मुनादी करने से क्या-क्या बला मेरे सिर पर आएगी। और मुशरिकों के हाथ से क्या कुछ दुख और दर्द उठाना होगा। बल्कि समस्त शिद्दतों और सख़्तियों और मुश्किलों को अपने नफ़्स पर गवारा कर के अपने मौला का हुक्म पालन किया। और जो जो शर्त मुजाहिदा और उपदेश और नसीहत की होती है वे सब पूरी कीं और किसी डराने वाले को कुछ हक़ीक़त न समझा। हम सच सच कहते हैं कि समस्त नबियों की घटनाओं में ऐसे ख़तरों के स्थान और फिर कोई ऐसा ख़ुदा पर भरोसा कर के खुले खुले शिर्क और मख़लूक़ की उपासना से मना करने वाला और इतना दुश्मन और फिर कोई ऐसा साबित-क़दम और दृढ़ निश्चय वाला एक भी साबित नहीं।"

(बराहीन अहमदिया हिस्सा 2,रुहानी खज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 111-112)

फिर उच्च आचरण का एक गुण शुक्र करना है। इस गुण के उच्च स्तर का हमारे आक़ा का नमूना और आदर्श क्या था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर समय इस बात की तलाश रहती थी कि किस तरह शुक्रगुज़ार बनें। ख़ुदा तआला का सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बंदा बनें। अत: हदीस में आता है इस उद्देश्य के लिए आप(स) दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह! तो मुझे अपना शुक्र अदा करने वाला और बहुत अधिक ज़िक्र करने वाला बना दे।

(सुनन अबू दाऊद, किताबलि वितर, हदीस1510)

और एक रिवायत में यह शब्द अधिक हैं कि हे अल्लाह मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा सबसे ज़्यादा शुक्र करने वाला हूं और तेरी नसीहत की पैरवी करने वाला हूँ और तेरी वसीयत को याद करने वाला हूँ।

(मस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 3 पृष्ठ 216 हदीस 8087 मस्नद अबी हुरैरह ,प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

क्या ही विनम्रता का स्थान है दुनिया का सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार यह दुआ कर रहा है कि मैं सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बनूं

एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रोटी के टुकड़े पर खजूर रखकर खा रहे थे और फ़रमाते थे यह खजूर इस रोटी का सालन है और इस पर शुक्रगुज़ारी फ़र्मा रहे थे।

(सुनन अबू दाऊद ,किताबुल अतअम: ,हदीस 3830)

प्राय यह होता कि सिरके से या पानी से ही रोटी खाते और इस पर भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा कर रहे होते।

(सहीहुल असर व जमीलुल अबर मिन सीरत ख़ैरुल बशर भाग 1 पृष्ठ 254 मकतब रवाइअ अल-मुमलकत, जुद्दह 2010 ई अज़ शामिला)

आजकल हम में से बहुत से ऐसे हैं जिनको अच्छा खाना भी उपलब्ध आता है और फिर भी हज़ार नख़रे होते हैं। घरों में कई झगड़े इसी वजह से पैदा हो रही होते हैं कि बीवी ने अच्छा खाना नहीं पकाया।

फिर फ़तह मक्का पर आप(स) की विनम्रता और शुक्रगुज़ारी का उदाहरण एक चरम को पहुंचा हुआ है। रिवायत में आता है जब आप(स) ज़ी तवा स्थान पर पहुंचे तो लाल यमनी कपड़े का पगड़ी बाँधे हुए अपनी सवारी पर ठहर गए और यह ख़्याल कर रहे थे कि अल्लाह तआला ने आप(स) को फ़तह देकर कितनी इज़्ज़त बढ़ाई है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विनम्रता और शुक्रगुज़ारी से अपना सिर इतना झुकाया कि यूं लगता था कि आप(स) की मुबारक दाढ़ी के बाल सवारी के कुजावा से छू जाएगें।

(सीरत इब्न हश्शाम पृष्ठ 546 ज़िक्र अल-असबाब अलमूजब अलमैसर इला मक्का व ज़िक्र फ़तह मक्का प्रकाशन दार इब्ने हज़म

बेरूत 2009 ई)

फिर आप(स) की एहसानमंदी और शुक्रगुज़ारी का एक उच्च उदाहरण इस तरह मिलता है कि जब मक्का के मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार की तरफ़ से ज़ुल्म किए गए और मुसलमानों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की और हब्शा के बादशाह ने उन्हें पनाह दी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजाशी बादशाह के इस उपकार को हमेशा याद रखा। अत: जब नजाशी का वफ़द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक बार हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके स्वागत के लिए ख़ुद खड़े हुए। सहाबा रज़ि ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल !उनके स्वागत के लिए हम काफ़ी हैं कि उनकी मेहमान नवाज़ी भी हम करेंगे स्वागत भी कर लेंगे आप(स) क्यों तकलीफ़ करते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ये लोग हमारे साथियों के साथ बड़े आचरण के साथ पेश आए थे और इज़्ज़त से उन्हें अपने पास रखा था इसलिए मैं पसंद करता हूँ कि उनके इस उपकार का बदला ख़ुद उतारुं।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 3 पृष्ठ 72 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी ग़ज़वा ख़ैबर ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

अत: यह उन लोगों के लिए भी शिक्षा है जो यहां हिजरत कर के आए हैं कि इन हुकूमतों ने जिन्होंने हमें यहां पनाह देकर हमारे लिए सुविधाएं उपलब्ध की हैं उनका शुक्रिया अदा करते हुए इन देशों की बेहतरी के लिए अपनी योग्यताएं प्रयोग करें और उन्हें इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा न सिर्फ इल्मी तौर पर बल्कि व्यावहारिक तौर पर भी दिखा कर बताएं कि क्या वास्तविक इस्लाम है और यह हमेशा याद रखें कि हम ने किसी भी तरह नुक़्सान नहीं पहुंचाना या उनसे ग़लत तरीक़ से माली लाभ हासिल नहीं करना, कोई सुविधा हासिल नहीं करनी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से जो हमें धर्म मिला और जिस तरह हमें हर आचरण की गहराई और उसके उच्च स्तर का इल्म हुआ इस पर शुक्रगुज़ारी का इज़्हार होना चाहिए। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह अल्लाह तआला का कमाल फ़ज़्ल है कि उसने सम्पूर्ण और मुकम्मल अक़ाइद की राह हमको अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा बिना किसी परेशानी और मेहनत के दिखाई है।" बिना किसी चेष्टा और मेहनत के हमें वह सीधा रास्ता दिखा दिया "वह मार्ग जो आप लोगों को इस ज़माना में दिखाया गया है बहुत से आलिम अभी तक इस से वंचित हैं। अत: ख़ुदा तआला के इस फ़ज़्ल और नेअमत का शुक्र करो। और वह शुक्र यही है कि सच्चे दिल से उन नेक कर्मों को करो जो सही अक़ीदे के बाद दूसरे हिस्सा में आते हैं और अपनी व्यावहारिक हालत से मदद ले कर दुआ माँगो कि वह इन सही अक़ीदों पर साबित क़दम रखे और नेक कर्मों की तौफ़ीक़ बख़्शे।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 149-150)

अत: यह है एक अहमदी के वास्तविक शुक्रगुज़ार होने का तरीक़ा।

फिर एक आचरण अमानत की अदायगी है और वादा की पाबंदी है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ

(अलमोमेनून 9)

और वे लोग जो अपनी अमानतों और वादों का ख़्याल रखते हैं। ये देखते हैं कि किस तरह हम उन्हें पूरा कर रहे हैं। इस के उच्चतरीन स्तर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस तरह स्थापित फ़र्मा कर हमारे सामने अपना आदर्श प्रस्तुत फ़रमाया। रिवायत में आता है कि जब इस्लामी फ़ौजों ने ख़ैबर को घेरा तो उस वक़्त वहां के एक यहूदी सरदार का नौकर जो जानवर चराने वाला था जानवरों समेत इस्लामी लश्कर के इलाक़े में आ गया और मुसलमान हो गया। उसने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मैं तो अब मुसलमान हो गया हूँ मैं वापस बिलकुल जाना नहीं चाहता। वापस जाऊँगा तो मेरे पर ज़ुल्म भी होगा। ये बकरियां मेरे पास हैं उनका अब मैं क्या करूँ। यह यहूदी का रेवड़ है, उनका मालिक यहूदी है आप ने फ़रमाया कि इन बकरियों का मुँह क़िले की तरफ़ फेर कर हाँक दो वे ख़ुद उसके मालिक के पास पहुंच जाएँगी। अत: इसी तरह हुआ और क़िले वालों ने वे बकरियां ले लीं।

(सीरत इब्न हश्शाम, पृष्ठ 517 ज़िक्र अल-मैसर इला ख़ैबर ,प्रकाशन दार इब्न हज़्म बेरूत 2009 ई)

यह है वह उच्च उदाहरण अमानत और दयानत का कि जंग की अवस्था है, दुश्मन का माल हाथ आया है लेकिन मुसलमान होने वाले को पहला सबक़ आप(स) ने यह दिया कि एक मुसलमान का अमानत और दयानत का स्तर बहुत बुलंद होना चाहिए। इस माल पर न तुम्हारा कोई हक़ है न हमारा। उसे उस के मालिकों को लौटा दो। आजकल के इस तरक़्क़ी वाले समाज में जंग की अवस्था में कहीं भी दुनिया में आपको यह स्तर नज़र नहीं आएँगे। जो इस्लाम पर और इस्लाम की शिक्षा पर एतराज़ करते हैं वही सबसे ज़्यादा इस ख़यानत के करने वाले होते हैं।

फिर वादा की पाबंदी का हाल है कि दुश्मन भी यह कहने पर मजबूर है कि आप(स) वादा के पाबंद हैं। हिरक़्ल के दरबार में अबू सुफ़ियान को यह स्वीकार करना पड़ा कि आज तक इस शख़्स ने हमारे साथ वादा नहीं तोड़ा।

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद हदीस 1773)

फिर सुलह हुदैबिया में जब मुआहिदा लिखा जा रहा था तो एक शख़्स ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ आता है जो मुसलमान होने के कारण से ज़ंजीरों में जकड़ा गया है और पनाह मांगता है लेकिन इस का बाप जो मुसलमान नहीं है वहां मौजूद है। वह आप(स) से कहता है कि अब हमारा मुआहिदा हो चुका है कि हमारा कोई आदमी आप(स) के साथ नहीं जाएगा। इसलिए आप(स) उसे साथ नहीं ले जा सकते चाहे वह आप(स) की पनाह में आने के लिए भीख मांग रहा है। वह आदमी बहुत शोर मचाता है कि क्या मैं काफ़िरों में वापस कर दिया जाऊँगा ताकि वे मुझे तकलीफ़ें पहुंचाएं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं हाँ अब मुआहिदा हो गया है हालाँकि उस वक़्त मुआहिदा अभी लिखा जा रहा था, कुछ शर्तें लिखी गई थीं लेकिन दस्तख़त होने से पहले ही आप(स) ने फ़रमाया क्योंकि लिखा गया है इसलिए बड़े मक़सद के लिए और इस मुआहिदे के लिए तुम्हें क़ुर्बान होना पड़ेगा। इसलिए तुम वापस जाओ। लेकिन साथ ही यह भी फ़र्मा दिया कि तुम कुछ दिन सब्र करो मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि ख़ुदा तआला तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर देगा। आप(स) ने फ़रमाया कि इस मुआहदे के कारण से आज मैं मजबूर हूँ क्योंकि हम वादा नहीं तोड़ा करते।

(सीरत इब्न हश्शाम पृष्ठ 504 , प्रकाशन दार इब्न हज़्म बेरूत 2009 ई)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

तो यह स्तर थे आप(स) के मुआहिदों की पाबंदी के। आजकल की दुनियादार हुकूमतें तो उस के क़रीब भी नहीं पहुंच सकतीं। आज एक मुआहिदा होता है और कल वह टूट जाता है लेकिन साथ ही हमें भी अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि हमारे अपने मुआहिदों की पाबंदी के स्तर क्या हैं। अपनी दैनिक ज़िन्दगी में हमें अपने उदाहरण देखने चाहिए। अपनी घरेलू ज़िन्दगी में भी इस के उदाहरण देखें कि क्या ओहदों की पाबंदी हम करते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो घरेलू ज़िन्दगी में भी अह्द की पाबंदी के बारे में फ़रमाया है कि क़यामत के दिन सबसे बड़ी ख़यानत यह गिनी जाएगी कि एक आदमी अपनी बीवी से सम्बन्ध क़ायम करे फिर वह बीवी की छुपी हुए राज़ भी दुनिया को वर्णन करता फिरे।

(सही मुस्लिम ,किताबुन्निकाह ,बाब तहरीम इफ़शा सिर्रुल मिर्त ,हदीस 1437)

आजकल हम देखते हैं कि कई लोग यह घटिया हरकत करते हैं। बहुत ज़लील और कमीनी हरकत करते हैं और फिर सिर्फ़ ज़बानी ही नहीं बताते लोगों को बल्कि वट्स एप्प पर और दूसरे मीडिया पर जो आजकल मैसेजों के माध्यम से, ट्वीटर के माध्यम से इस बात को फैलाते चले जाते हैं। यह निसन्देह सबसे बड़ी ख़यानत करने वाले हैं और अल्लाह तआला ने इस से मना फ़रमाया है। और अगर जुदाई भी हो जाती है तो तब भी किसी को यह हक़ नहीं है कि एक दूसरे का राज़ बाहर निकाले। यह बहुत बड़ी ख़यानत है और यह अल्लाह तआला की पकड़ में आने वाली बात है। अल्लाह तआला इस बारे में ज़रूर पूछेगा।

अत: ऐसे लोगों को अपनी फ़िक्र करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह वादा की पाबंदी के बारे में फ़रमाते हैं कि " क्या ही ख़ुश-क़िस्मत वे लोग हैं जो अपने दिलों को साफ़ करते हैं और अपने दिलों को हर एक गन्दगी से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का वादा बाँधते हैं क्योंकि वे हरगिज़ नष्ट नहीं किए जाऐंगे। संभव नहीं कि ख़ुदा उनको अपमानित करे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उनका। वे हर एक बला के समय बचाए जाऐंगे।"

(किश्ती नूह, रुहानी खज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 19-20)

अत: अगर ख़ुदा तआला से विशेष सम्बन्ध जुड़ेगा तो फिर अल्लाह तआला के आदेशों की भी पाबंदी होगी और घरेलू वादों से लेकर बाहर के समाज के ओहदों तक यह पाबंदियां होंगी और दूसरे सम्बन्धों को निभाने में भी ये पाबंदियां होंगी। कारोबारी मुआहिदों और ओहदों में भी ये पाबंदियां होंगी। हर किस्म के ओहदों की ख़ुदा तआला की रज़ा को सामने रखते हुए पाबंदी से हर किस्म के नुक़्सान से फिर ऐसे लोग बचने वाले होंगे कि ख़ुदा तआला के हुक्म के कारण से हम ओहदों की पाबंदी कर रहे हैं और यही एक वास्तविक अहमदी का तरीक़ा और वास्तविक मुसलमान का तरीक़ा होना चाहिए।

फिर विनम्रता एक बहुत बड़ा गुण है इस के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا

(अलफ़ुर्कान: 64)

और रहमान के सच्चे बंदे वे होते हैं जो ज़मीन पर आराम से चलते हैं और जब जाहिल लोग उनसे सम्बोधित होते हैं तो वे लड़ते नहीं कहते हैं कि हम तो तुम्हारे लिए सलामती की दुआ करते हैं एक तरफ़ हो जाते हैं,फ़ुज़ूल बातें नहीं करते। इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपना आदर्श क्या था? हज़रत उमर रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि मेरी बहुत ज़्यादा प्रशंसा न करो जिस तरह इसाई इब्न मरयम की करते हैं। मैं सिर्फ अल्लाह का बंदा हूँ। अत: तुम मुझे सिर्फ अल्लाह का बंदा और रसूल ही कहो।

(सही अल-बुख़ारी, किताब अहादीस अंबिया ,हदीस 3445)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि "हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी सम्पूर्ण इन्सान का नमूना मौजूद नहीं और न भविष्य में क़यामत तक हो सकता है। फिर देखो कि इक़तिदारी चमत्कार के मिलने पर भी हुज़ूर के सम्मुख हमेशा उबूदीयत ही रही। बार बार اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ (अलकहफ़111) ही फ़रमाते रहे। यहां तक कि कलिमा तौहीद में अपनी उबूदीयत के इक़रार का एक भाग अनिवार्य क़रार दिया। जिसके बिना मुसलमान मुसलमान ही नहीं हो सकता। सोचो और फिर सोचो! अत: जिस हाल में सब से बढ़ कर हिदायत देने वाले की ज़िन्दगी हमको यह शिक्षा दे रही है कि क़ुर्ब के उच्च स्थान पर भी पहुंच कर उबूदीयत के स्वीकार करने को हाथ से नहीं दिया तो और किसी का तो ऐसा ख़्याल करना और ऐसी बातों का दिल में लाना ही फ़ुज़ूल और व्यर्थ है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 117-118)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि तुम लोग अपने झगड़े लेकर मेरे पास लाते हो और मैं भी एक आदमी हूँ और हो सकता है तुम में से एक अपनी दलील पेश करने में दूसरे से ज़्यादा तेज़ हो और मैं जो सुनूँ उस के अनुसार उस के हक़ में फ़ैसला कर दूं जो ज़्यादा बातें करने वाला है, ज़्यादा दलीलें पेश करने वाला है। अत: जिसको मैं इस के भाई के हक़ में से कुछ दूं, इन दलीलों के कारण से दे दूं और इस का हक़ न हो हक़ उस के भाई का बनता हो और मैं इस के भाई के हक़ में से उसे कुछ दे दूं तो वह इस को न ले। ईमानदारी का तक़ाज़ा यही है कि बावजूद फ़ैसले के न ले क्योंकि ऐसी अवस्था में मैं इस को आग का एक टुकड़ा काट कर दे रहा हूंगा।

(सही अल-बख़ारी ,किताबुल शहादात, हदीस 2680)

अपने हक़ में फ़ैसला तो करा लोगे लेकिन वह आग का टुकड़ा होगा बेहतर यही है कि इस आग के टुकड़े से बचो ,जहन्नुम की आग से बचो और साफ़ साफ़ कह दो कि नहीं मेरा हक़ नहीं। हक़ किसी का बनता है।

अत: जो लोग ग़लत फ़ैसले करवाने की कोशिश करते हैं उन के लिए बड़ा भय का स्थान है। घरेलू ज़िन्दगी में भी आप(स) की विनम्रता और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

घर वालों की मदद का यह हालत थी कि हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर अपने घर वालों के साथ घरेलू काम में मदद फ़रमाते थे। आप(स) कपड़े ख़ुद धो लेते थे,घर में झाड़ू भी दे लिया करते थे। ख़ुद ऊंट को बाँधते थे, पानी लाने वाले जानवरों को ख़ुद चारा डालते थे, बकरी ख़ुद दोहते थे, अपने ज़ाती काम भी ख़ुद कर लेते थे। सेवक से कोई काम लेते तो इस में इस का हाथ भी बटाते थे यहां तक कि इस के साथ मिलकर आटा भी गूँध लेते थे। बाज़ार से अपना सामान ख़ुद उठा कर लाते।

(अश्शफ़ा तअरीफ़ हुक़ूक़ुल मुस्तफा पृष्ठ 176 हदीस 271, 272, 273 अध्याय 2 फ़सल फ़ी तवाज़ा प्रकाशन जायज़त दबी अद्दौलत लिल्कुरान करीम 2013 ई (वसाइलुल वसूल इला शमाइल रसूल भाग 1 पृष्ठ 241 दार अलमिन्हाज जद्दह 1425 हिजरी,शामिला)

आजकल घरों में कई मर्द बड़ा अंहकार दिखाते हैं। कपड़े समय पर न धुलें तो घर में फ़साद खड़ा हो जाता है हालाँकि अब तो हाथ से नहीं धोने, वाशिंग मशीन घर में मौजूद है, ख़ुद भी वह वाशिंग मशीन में कपड़े डाल सकते हैं लेकिन फिर भी इतनी भी तकलीफ़ नहीं करनी। झाड़ू तो फेरना अब रहा नहीं हर जगह hoover हैं, आराम से hoover फेरा जा सकता है लेकिन वहां भी नख़रे होते हैं और इस वजह से घरों में फ़साद हो रहा होता है। अत: अहमदी हो कर हमें अपने नमूने दिखाने चाहिए।

फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाहर की ज़िन्दगी देखें तो इस में भी आप(स) के उच्च नमूने एक मिसाल हैं। उनका वर्णन करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "अहंकार करने वाला ख़ुदा तआला के तख़्त पर बैठना चाहता है। अत: इस बुरी आदत से हमेशा पनाह माँगो। ख़ुदा तआला के समस्त वादे भी चाहे तुम्हारे साथ हों मगर तुम जब भी विनय करो। क्योंकि विनय करने वाला ही ख़ुदा तआला का प्रिय होता है। देखो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सफलताएं यद्यपि ऐसी थीं कि समस्त पिछले अंबिया में इस का उदाहरण नहीं मिलता मगर आप(स) को ख़ुदा तआला ने जैसी-जैसी सफलताएं प्रदान कीं आप उतना ही विनय धारण करते गए।

एक बार का वर्णन है कि एक व्यक्ति आप(स) के हुज़ूर पकड़ कर लाया गया। आप (स) ने देखा तो वह बहुत काँपता था और ख़ौफ़ खाता था मगर जब वह क़रीब आया तो आपने निहायत नर्मी और प्यार से पूछा कि तुम ऐसे डरते क्यों हो? मैं भी तुम्हारी तरह एक इन्सान ही हूँ और एक बुढ़िया का बेटा हूँ।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 258)

फिर एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विनम्रता और विनय का वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:"ख़ाली शेख़ियों से और व्यर्थ के अंहकार और बड़ाई से परहेज़ करना चाहिए और विनय और विनम्रता धारण करनी चाहिए। देखो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि वास्तव में सबसे बड़े और मुस्तहिक़ बुज़ुर्ग थे उनकी विनम्रता और विनय का एक नमूना क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है। लिखा है कि एक अंधा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आकर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा करता था। एक दिन आप(स) के पास मक्का के रईस और शहर के बड़े लोग जमा थे और आप(स) उनसे बातचीत में व्यस्त थे। बातों में व्यस्तता के कारण से कुछ देर हो जाने से वह अन्धा उठ कर चला गया। यह एक मामूली बात थी। अल्लाह तआला ने इस के बारे में सूरत नाज़िल फ़र्मा दी। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के घर में गए और उसे साथ ला कर अपनी चादर मुबारक बिछा कर बिठाया।"

आप फरमाते हैं कि "असल बात यह है कि जिन लोगों के दिलों में अल्लाह तआला की महानता होती है उनको अनिवार्य रूप से विनम्र और विनय वाला बनना ही पड़ता है क्योंकि वह ख़ुदा तआला की बेनियाज़ी से हमेशा भयभीत रहते हैं।

आना नका आरिफ़ तरा अंद तरसाँ तर

कि वे लोग जो ज़्यादा जानते हैं ज़्यादा डरते हैं "क्योंकि जिस तरह अल्लाह तआला नुक्ता-नवाज़ है इसी तरह नुक्ता गीर भी है। अगर किसी हरकत से नाराज़ हो जाए तो क्षण भर में सब कारख़ाना समाप्त है। अत: चाहिए कि इन बातों पर ध्यान दो और उनको याद रखो और कर्म करो।"(मलफ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 343-344)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो हमें जो नसीहत फ़रमाई वह निसन्देह हमेशा हमारे लिए कर्म के लिए है और जो नसीहतें हैं आप(स) की वे निसन्देह हमें फ़िक्र में डालने वाली होनी चाहिऐं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्थान पर फ़रमाया। तुम में से कोई भी अपने कर्मों के कारण से नजात नहीं पाएगा। सहाबा रज़ि ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप(स) भी? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ मैं भी अपने कर्मों के कारण से नजात नहीं पाऊँगा लेकिन अल्लाह तआला मुझे अपनी रहमत के साय में ले लेगा। फिर आप(स) ने फ़रमाया अत: तुम सीधे रहो और शरीयत के क़रीब रहो और सुबह और शाम और रात के समयों में इबादत करो और मध्य मार्ग को धारण करो। तुम अपनी मुराद को पहुंच जाओगे। इबादत करो और मध्य मार्ग धारण करो।

(मस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 3 पृष्ठ 753 हदीस 10688 मस्नद अबू हुरैरह प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

मध्य मार्ग हर मामला में ज़रूरी है। दुनियादारी में न पड़ जाओ। अल्लाह तआला ने दुनियादारी का जायज़ हक दिया है लेकिन मध्य मार्ग होना चाहिए। ख़ुदा न भूल जाए। जहां अल्लाह तआला की इबादत के हक़ अदा करने हैं वहां उस की तरफ़ ध्यान दो। जो कारोबार है इस की तरफ़ ध्यान करो और इस के जो हक़ हैं वे अदा करने की कोशिश करो लेकिन दुनियादारी ख़ुदा तआला के हक़ के मुक़ाबला पर नहीं होना चाहिए। धर्म दुनिया पर हमेशा प्राथमिक होना चाहिए। जब यह होगा तो आप(स) ने फ़रमाया तुम अपनी मुराद को पहुंच जाओगे। अल्लाह तआला का रहम तुम्हें मिल जाएगा, फ़ज़ल मिल जाएगा। अत: जहां इस बात से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विनम्रता का प्रकटन होता है वहां अल्लाह तआला का भय और ख़ौफ़ का भी प्रकटन हो रहा है और फ़रमाया कि जब मेरी यह अवस्था है तो तुम लोगों को कितना ख़ुदा तआला को राज़ी करने और इस का रहम मांगने की चिन्ता करनी चाहिए। यह अल्लाह तआला का रहम और फ़ज़ल ही है जो अल्लाह तआला के इनामों का वारिस बनाता है और हमें यह नहीं पता कि किस माध्यम से स्वीकार किए जाऐंगे इसलिए इस रहम और फ़ज़ल को प्राप्त करने के लिए अपनी इबादतों और उच्च आचरण की तरफ़ हमें ध्यान देना चाहिए।

ज़ाहिरी हालत भी और इन्सान के चेहरे के भाव भी इस के आचरण का प्रकटन करते हैं। इस बारे में सहाबा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में किस तरह वर्णन करते हैं। हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों में सबसे ज़्यादा सुन्दर और उच्च आचरण वाले थे।

(सही अलबुख़ारी, किताबुल मनाक़िब ,बाब सिफतुन्नबी हदीस3549)

लोग अच्छी शक्ल के हों तो अंहकार पैदा हो जाता है। आप(स) यह दुआ किया करते थे कि हे ख़ुदा जिस तरह तूने मुझे अच्छी शक्ल का बनाया है इसी तरह अच्छे आचरण का भी बना दे।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल ,भाग 8 पृष्ठ 288 हदीस 25736 मस्नद आयशा प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

यह ज़िन्दगी के कुछ पक्ष हैं जो मैंने अभी वर्णन किए हैं जिनसे आप(स) की सीरत की सुन्दरता रोशन हो कर नज़र आती है लेकिन विनम्रता यह है कि ख़ुदा तआला से दुआ कर रहे हैं कि मेरी सीरत मेरे आचरण मेरी इबादत के स्तर हमेशा ऐसे हों जो तुझे और तेरी सृष्टि को पसन्द हूँ।

फिर एक और सहाबी गवाही देते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा किसी का चेहरा हंसता हुआ नहीं देखा और मुस्कुराने वाला नहीं देखा

(सुंनन अत्तिर्मज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, हदीस 3641)

उम्मे मअबद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के व्यक्तित्व के बारे में यूं वर्णन करती हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूर से देखने में लोगों में सबसे ज़्यादा सुन्दर थे और क़रीब से देखने में बहुत मधुर भाषी और उत्तम आटरण वाले थे।

(मुस्तदरक अल सहीहीन भाग 3 पृष्ठ 10-11 किताबुल हिजर ,हदीस 4274 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत अली वर्णन फ़रमाते हैं कि आप(स) लोगों में सबसे अधिक खुले दिल के थे और बातचीत में लोगों में सबसे अधिक सच्चे थे और उनमें सबसे अधिक ख़ूबसूरत थे और सामाजिकता तथा उत्तम मामला में सबसे अधिक सम्माननीय थे और प्रशंसनीय थे।

(सुनन अत्तिर्मज़ी ,अबवाबुल मनाकिब, हदीस 3638)

आप(स) के उत्तम आदर्श के कई उदाहरण और आचरण के असंख्य उदाहरण हैं। आप(स) के आचरण के किसी पहलू को भी ले लो वह आप(स) में सम्पूर्ण और परिपूर्ण नज़र आता है और यही आदर्श है जिसे अपनाने के लिए अल्लाह तआला ने हमें आदेश दिया है। अत: अगर हमने दुनिया को इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्तविक चेहरा दिखलाना है तो आप(स) के आदर्श के हर पहलू को सामने रखते हुए अपने व्यवहार और कथन से वह चेहरा दिखाना होगा तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का भी हक़ अदा कर सकेंगे जिन को अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म के प्रचार के लिए इस युग में भेजा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "हाँ जो उत्तम आचरण हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन है वह हज़रत मूसा से हज़ारों दर्जा बढ़कर है। क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि हज़रत ख़ातमुल अंबिया समस्त उन उत्तम आचरणों का सार हैं जो नबियों में अलग अलग रूप में पाए जाते थे और इसी तरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ में फ़रमाया है إِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيمٍ (अल-क़लम 5) तू महान आदर्श वाला है और अज़ीम के शब्द के साथ जिस चीज़ की प्रशंसा की जाए वह अरब के मुहावरा में इस चीज़ के चरम की तरफ़ इशारा होता है। जैसे अगर यह कहा जाए कि यह वृक्ष अज़ीम है तो इस से यह अभिप्राय होगा कि जहां तक वृक्षों के लिए लम्बाई तथा चौड़ाई और मज़बूती संभव है वह सब इस वृक्ष में है। ऐसा ही इस आयत का अभिप्राय है कि जहां तक उत्तम आचरण तथा नेक गुणों के नफ़स इन्सानी को प्राप्त हो सकते हैं वे समस्त सम्पूर्ण आचरण मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नफ़स में मौजूद हैं। अत: यह परिभाषा ऐसी उच्च दर्जा की है जिससे बढ़कर संभव नहीं।"

(बराहीन अहमदिया भाग 4, रुहानी खज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 606 हाशिया का हाशिया नम्बर 3)

फिर आप हैं "वह इन्सान जिसने अपनी ज़ात से अपने गुणों से अपने कर्मों से अपने कार्यों से और अपनी रुहानी और पवित्र शक्तियों के ज़ोर वाले दरिया से सम्पूर्ण नमूना बौधिक, व्यावहारिक, सच्चे तथा सुदृढ़ रूप में दिखलाया और सम्पूर्ण इन्सान कहलाया वह इन्सान जो सबसे अधिक सम्पूर्ण और परिपूर्ण इन्सान था और सम्पूर्ण नबी था और सम्पूर्ण बरकतों के साथ आया जिससे रुहानी प्रादुर्भाव और आने के कारण से दुनिया की पहली क़यामत प्रकट हुई और एक युग का युग मरा हुआ उस के आने से ज़िन्दा हो गया वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातमुल अंबिया ख़तमुल असफिया ख़त्मुल मुर्सलीन फ़ख़रुल नबिय्यीन मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। हे प्यारे ख़ुदा इस प्यारे नबी पर वह रहमत और दरूद भेज जो संसार के आरम्भ से तूने किसी पर न भेजा हो। अगर यह महानतम नबी दुनिया में न आता तो फिर जितने छोटे-छोटे नबी दुनिया में आए जैसा कि यूनुस और अय्यूब और मसीह बिन मर्यम और मलाक़ी और यहाया और ज़करिया इत्यादि इत्यादि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई भी दलील नहीं थी यद्यपि सब मुक़र्रब और सम्माननीय और ख़ुदा तआला के प्यारे थे। यह उसी नबी का एहसान है कि ये लोग भी दुनिया में सच्चे समझे गए।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

(इत्मामुल हुजज, रुहानी खज़ायन, भाग 8 पृष्ठ 308)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि इस सम्पूर्ण नबी की उम्मत में आने का हक़ अदा करने वाले हों और इस ख़ूबसूरत और रोशन चेहरे को दुनिया के सामने पेश कर के दुनिया के अंधेरों को दूर करने वाले बनें। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन। अब दुआ कर लें।

दुआ

(अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 13 अगस्त 2019)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सर्वोत्तम रसूल

(सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो)

(यह निबन्ध तफ़सीर कबीर सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो भाग 10 सूर: अलकौसर की तफ़सीर से लिया गया है। आप ने "कौसर" की व्याख्या में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत के जो कमाल वर्णन फ़रमाए हैं वे पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं -सम्पादक)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं

"पहले अर्थ (कौसर के) यह थे कि नबुव्वत के कमालात का उच्च रूप में मिलना और बहुत मिलना। इस विषय की व्यापकता की कोई सीमा नहीं और ख़ुदा तआला के सिवा और कोई उसे सम्पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकता। लेकिन उदाहरण के तौर पर कुछ बातें वर्णन की जा सकती हैं। इस बारे में हमें सबसे पहले यह देखना चाहिए कि आप(स) का दावा क्या था क्योंकि किसी की ख़ूबियों का पता लगाने के लिए यह ज़रूरी होता है कि इस के दावा का पता लगाया जाए। जैसे यदि एक व्यक्ति हमारे पास आकर कहता है कि मैं सबसे बड़ा उस्ताद हूँ, तो हम देखेंगे कि क्या उस्ताद होने की सब शर्तें इस में पाई जाती हैं या नहीं। अगर वह शर्तें दूसरों की तुलना इस में अधिक पाई जाती हूँ तो हम स्वीकार कर लेंगे कि वह सबसे बड़ा उस्ताद है लेकिन अगर कोई कहे कि मैं सबसे बड़ा उस्ताद हूँ और जब प्रश्न किया जाए कि तुम में कौन कौन से गुण पाए जाते हैं और वह जैसे कहे कि मैं अंडे अधिक खा जाता हूँ तो हर व्यक्ति उस को मूर्ख समझेगा। या वह कहे कि मैं डंढ ज़्यादा पेलता हूँ या बैठकें ज़्यादा निकालता हूँ तो सब लोग इस पर हँसेंगे। मगर जब वह कहे कि मैं बड़ा पहलवान हूँ और फिर वह कहे कि मैं ख़ुराक अधिक खाता हूँ, बोझ ज़्यादा उठा सकता हूँ, डंढ ज़्यादा पेलता हूँ और कई किस्म के शारीरिक करतब दिखाता हूँ तो हम कहेंगे ठीक कहता है। फिर हम इस से यह नहीं पूछेंगे कि क्या तो केन्ट का दर्शन जानता है? अगर हम इस से पूछेंगे कि क्या तो कैन्ट का दर्शन जानता है, तो वह फ़ौरन कह देगा कि मेरा दर्शन से क्या सम्बन्ध है मैंने तो पहलवानी का दावा किया है फ़ल्सफ़ादानी का नहीं। अत: जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह कहा कि मैं सबसे बड़ा हूँ, तो हम देखेंगे कि आपका दावा क्या है और कौन कौन शख़्स आपके दावा में शरीक है ताकि हम इस से आपका मुक़ाबला करके देखें और मालूम करें कि आया आप वास्तव में सबसे बड़े हैं या नहीं। इस दृष्टिकोण से जब हम ग़ौर करते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा क्या था तो हमें क़ुरआन करीम में यह आयत नज़र आती कि :

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا

(अल-मुज़म्मिल :16)

अर्थात हे लोगो हमने तुम्हारी तरफ़ एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा है जो तुम्हारा निगरान है और वह वैसा ही रसूल है जैसा कि हमने फ़िरऔन की तरफ़ मूसा (अलैहिस्सलाम) को रसूल बनाकर भेजा था। दुनिया में जितने नबी गुज़रे हैं उन में प्रसिद्ध नबी मूसवी सिलसिला के अंबिया ही हैं। हज़रत कृष्ण हज़रत राम चन्द्र की नबुव्वत को दूसरे मुसलमान तो मानते ही नहीं, हम मानते हैं लेकिन हमारे पास उन का इतिहास सुरक्षित नहीं। उन की शिक्षाऐं क्या थीं हमें उन के विस्तार का कुछ ज्ञान नहीं। सिर्फ गीता एक ऐसी पुस्तक है जो हज़रत कृष्ण अलैहिस्सलाम की तरफ़ सम्बन्धित की जाती है मगर इस में भी प्राय लड़ाइयों और तारीख़ी घटनाओं का ही वर्णन है। आप के दावा का विवरण इस से नहीं मिलता। बहरहाल इस्राईली नबी जिनका इतिहास एक सीमा तक सुरक्षित है उन के सरदार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम थे और अल्लाह तआला रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधन करके फ़रमाता है कि तू भी मूसा जैसा नबी है अर्थात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस जिन्स में शामिल थे जिस जिन्स में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शामिल थे। अब यह स्पष्ट बात है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जो नबुव्वत के कमालात प्रदान किए गए थे अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमालात उन से ज़्यादा साबित हो जाएं तो अनिवार्य रूप से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कौसर का मिलना भी साबित हो जाएगा। क्योंकि ख़ुदा तआला ने केवल यह नहीं फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ही किस्म से हैं और आपके गुण हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के गुणों के समान हैं बल्कि अल्लाह तआला फ़रमाता है إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ जो चीज़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिली है वह दूसरों से बढ़कर है। अर्थात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वाले गुण भी आपको मिले और फिर उन से बढ़कर मिले। अब हम देखते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बड़ी बड़ी घटनाएं क्या गुज़री थीं और फिर उनका मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घटनाओं से मुक़ाबला करते हैं ताकि यह मालूम कर सकें कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने किस-किस रंग में कौसर प्रदान फ़रमाया है। इस बारे में जब हम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हालात पर ग़ौर करते हैं तो हमें मालूम होता कि :

(1) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कलाम इलाही फैलाने और लोगों को रुहानी ज्ञान सिखाने के लिए आए थे और यह सीधी बात है कि ज़ाहिरी ज्ञान इस काम में बहुत सहायक होते हैं। इल्म सिखाने के काम में पढ़े लिखे आदमी के लिए बहुत आसानी होती है। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब नबी बनाया गया तो आप पढ़े लिखे थे। क़ुरआन करीम और तौरात दोनों से उसका पता चलता है। मानो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब नबियों का काम दिया गया तो सांसारिक हथियार आपके पास मौजूद था अर्थात आप पढ़े लिखे थे और अपने काम को उत्तम तरीक़ा पर सर अंजाम दे सकते थे। लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब वही काम सपुर्द हुआ तो आप पढ़े लिखे नहीं थे। मगर अनपढ़ होने के बावजूद आपने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से ज़्यादा सफलता प्राप्त की। यह एक बहुत बड़ी महानता है जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर है।

(2) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम एक ऐसी जाति की तरफ़ भेजे गए थे जो सभ्यता वाली थी। आप जब मिस्र में तशरीफ़ लाए उस समय मिस्री क़ौम चोटी की क़ौम समझी जाती थी और चूँकि बनी इस्राईल भी इस के साथ रहते थे इसलिए इस्राईली क़ौम भी पढ़ी लिखी और सभ्यता वाली

थी और पढ़े लिखे और सभ्य लोगों को धार्मिक ज्ञान सिखाना अधिक सरल होता है। इन में निज़ाम को स्थापित करना और उन के अंदर जमाअत की रूह पैदा करना तुलनात्मक रूप से आसान होता है। मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऐसी क़ौम की तरफ़ आए थे जो असभ्य थी और ज़ाहिरी उलूम से बिलकुल अपरिचित थी। अत: हज़रत उमर रज़ि के युग की यह घटना है कि जब मुस्लमानों की किसरा से लड़ाई हो रही थी तो एक बार किसरा ने दरबारियों से कहा तुम उन लोगों को मेरे पास लाओ। मालूम होता है तुम उन से अच्छा व्यवहार नहीं करते, मैं उन्हें रुपए दे दूंगा और यह ख़ुश हो कर वापस चले जाऐंगे। अत: किसरा ने इस्लामी लश्कर के जरनैल को कहला भेजा कि मेरे पास अपना वफ़द भेजो। जब वह वफ़द किसरा के दरबार में आया तो किसरा ने कहा कि तुम लोग वहशी और मुर्दा खाने वाले हो और गोहें खाते हो तुम्हारा बादशाहतों के साथ किया सम्बन्ध है। मैं तुमको रुपए देता हूँ तुम वापस जाकर उन्हें ख़र्च करो और घरों में आराम से बैठो। अगर तुम वापस जाने के लिए तैयार हो जाओ तो मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारे हर अफ़्सर को दो अशर्फ़ियां और हर सिपाही को एक अशर्फ़ी दूँगा। जब किसरा अपनी बात ख़त्म कर चुका तो वफ़द के सरदार ने जो एक सहाबी रज़ि थे जवाब दिया कि आपने जो कुछ कहा है ठीक है। हम वास्तव में ऐसे ही थे हम वहशी थे, हम मुर्दा खाते थे, हम गोहें खाते थे, हम अनाथों के साथ बुरा व्यवहार करते थे, हम अपनी माताओं के साथ शादियां कर लेते थे और हमारे अन्दर सारे दोष मौजूद थे लेकिन अल्लाह तआला ने हमारी तरफ़ एक रसूल भेजा जिस को हमने स्वीकार कर लिया। इस लिए अब हमारी हालत और है अब हम वह नहीं रहे जो पहले थे। अब हम इस किस्म की लालचों में आने वाले नहीं हमारे और तुम्हारे बीच लड़ाई छिड़ चुकी है अब उस का फ़ैसला मैदाने जंग में होगा अशर्फ़ियों और लालचों से न होगा। या हम तुम को मारेंगे या ख़ुद इस लड़ाई में शहीद हो जाएंगे। बादशाह ने अपने एक नौकर से कहा जाओ और एक मिट्टी का बोरा लाओ। वह नौकर गया और एक मिट्टी का बोरा ले आया। किसरा ने इस सहाबी रज़ से कहा ज़रा आगे आओ। वह आगे गए तो बादशाह ने अपने नौकर से कहा मिट्टी का बोरा उन के सिर पर रख दो। वह सहाबी रज़ि इन्कार भी कर सकते थे मगर वह बड़े अदब से झुक गए और इस बोरे को अपने सिर पर उठालया। किसरा ने कहा जाओ मैं तुमको कुछ भी देने को तैयार नहीं। यह मिट्टी में तुम पर डालता हूँ। वह सहाबी रज़ि छलांग लगाकर वहां से निकले और अपने साथियों से कहा चलो बादशाह ने ख़ुद अपने हाथों से ईरान की ज़मीन हमारे हवाला कर दी है। बादशाह मुशरिक था और मुशरिक वहमी होता है वह यह शब्द सुनकर काँप उठा और उसने अपने दरबारियों से कहा दौड़ो और उन्हें वापस लाओ। मगर वह उस वक़्त तक घोड़ों पर सवार हो कर बहुत दूर निकल चुके थे। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जिस क़ौम और देश में काम किया वह क़ौम और देश सबसे ज़्यादा सभ्य थे। इन के जो पुरातन चिन्ह मिलते हैं इन से भी इस चीज़ का पता चलता है। उस युग की इमारतों को ले लो आजकल की इमारतें उन के सामने बिलकुल हीन लगती होती हैं। साईंस को देखो तो उन्होंने मुर्दों को मसाले लगाकर इस तरह रखा है कि वह अब भी ज़िन्दा मालूम होते हैं। मैंने वे मम्मियां ख़ुद देखी हैं उन पर से कपड़े उतार दो तो इस तरह मालूम होता है कि मानो कोई आदमी सोया हुआ है। सिर्फ कुछ दुबला सा हो गया है। यूरोप वाले आज तक कोशिश करते रहे हैं कि वह भी ऐसा कर सकें मगर इस में कामयाब नहीं हुए। अब उन्होंने मम्मियों से मसाला निकाल कर उनका analysis किया है और वे एक हद तक उन को सुरक्षित रखने में कामयाब हो गए हैं। मगर फिर भी उनका मसाला सिर्फ दस बारा साल तक जाता है। लेकिन मिस्री मुर्दे हज़ारों साल से सुरक्षित चले आ रहे हैं। 3400 साल बल्कि इस से भी अधिक समय के मुर्दे अब तक सुरक्षित हैं। यह कितनी बड़ी तरक़्क़ी थी जिसका मुक़ाबला आजकल की कौमें भी नहीं कर सकीं। फिर मिस्री क़ौम में सोने का काम निहायत उच्च स्तर का होता था जो उन की तरक़्क़ी की एक स्पष्ट निशानी है। इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मिस्री क़ौम के साथ रहने वाले लोग कितने सभ्य और तरक़्क़ी वाले होंगे। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इस क़ौम से काम लिया जो सभ्य थी और ज़ाहरी उलूम से भरी हुई थी। मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस क़ौम से काम लिया जो अपनी माताओं का अदब करना भी नहीं जानते थे बल्कि उन से शादी कर लेते थे और दूसरे दोष भी उन में पाए जाते हैं। फिर आप अपने काम में कामयाब हुए और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बढ़कर हुए।

(3) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब नबुव्वत मिली तो आपने अल्लाह तआला से कहा कि यह काम बहुत बड़ा है मुझ से नहीं हो सकेगा मेरे साथ एक और आदमी बतौर मददगार निर्धारित कर दीजिए और फिर आप ने यह भी कहा कि وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ (ताहा रकूअ 2) वह मददगार भी मुझे मेरे रिश्तेदारों में से ही मिलना चाहिए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का एहसास देखो कि जब ख़ुदा तआला की तरफ़ से आपको नबुव्वत के मुक़ाम पर सरफ़राज़ किया गया तो आपने कहा मैं यह काम नहीं कर सकता। ख़ुदा आपके सपुर्द एक काम करता है और मूसा अलैहिस्सलाम इन्कार करते हैं। हम मान लेते हैं कि यह विनय था मगर विनय की भी कोई हद होनी चाहिए। ख़ुदा तआला ने बार-बार आप से कहा कि तुम फ़िरऔन की तरफ़ जाओ मगर जैसा कि तौरात से मालूम होता है आप जवाब में इन्कार ही करते चले गए। फिर आपका अपने साथ एक मददगार मांगने पर इसरार करना और यह कहना कि वह हो भी मेरे ख़ानदान में से ही, यह बताता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बावजूद ख़ुदा तआला के हुक्म के अपने काम में दुनयावी सामानों की मदद भी चाहते थे। इस के मुक़ाबला में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो नबुव्वत के ज़माना से कितने दूर थे (मूसा अलैहिस्सलाम के तो क़रीब के ही ज़माना में हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्हाक़ हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ अलैहिमुस्सालम कई अंबिया गुज़रे थे मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहीं 2500 साल पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हुए इसके बाद आपकी क़ौम में कोई नबी नहीं आया) मगर आपकी मार्फ़त देखो आपके पास फ़रिश्ता आया और इस ने कहा اِقْرَءْ इकरा जिसके अर्थ यह हैं तू पढ़। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया مَا اَنَا بِقَارِءٍ मैं तो लिखा पढ़ा नहीं हूँ। इस का यह मतलब नहीं कि कोई किताब आपने पढ़नी थी। जिब्राईल अलैहिस्सलाम के पास कोई किताब नहीं थी कि वह आपसे कहते यह किताब पढ़ो और जब कोई वजूद बिना किताब के आए और कहे पढ़ तो इस का मतलब यह होता है कि जो कुछ मैं कहता जाता हूँ तू इस को दुहराता जा। अत: जब आपसे फ़रिश्ते ने कहा पढ़ तो इस का अर्थ यह था कि हे व्यक्ति (उस समय आप नबी नहीं थे) जो कुछ मैं कहता जाऊं तुम उसे दुहराते जाओ। लेकिन आप फ़रमाते हैं مَا اَنَا بِقَارِءٍ मैं तो लिखा पढ़ा नहीं हूँ। यह थी आपकी विनम्रता। आप समझते थे कि मेरे सपुर्द कोई बड़ा काम होने वाला है मगर ख़ुदा तआला बड़ी शान वाला है और मैं बंदा विनम्र हूँ। हो सकता है कि मैं वह काम पूरी तरह सरअंजाम न दे सकूं इस लिए आपने कहा मैं लिखा पढ़ा नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने दोबारा कहा इकरा पढ़। आपने फिर फ़रमाया مَا اَنَا بِقَارِءٍ मैं लिखना पढ़ना नहीं जानता। फिर तीसरी बार फ़रिश्ता ने कहा इकरा पढ़ तो आप पढ़ने लग गए। यह था विनम्रता। मूसा अलैहिस्सलाम की तरह आप बार-बार इन्कार नहीं करते गए। बल्कि जब आपने समझा कि ख़ुदा तआला इस मामला को बहरहाल मेरे ही सपुर्द करना चाहता

है तो आपने उस का हुक्म शीघ्र मान लिया और समझ लिया कि अब इन्कार करना अदब के विरुद्ध है। फिर आपने यह नहीं कहा कि मुझे कोई मददगार दें बल्कि कहा कि जब अल्लाह की इच्छा ही यह है कि मैं इस बोझ को उठाऊं तो मैं इस को अकेला ही उठाऊँगा। यह है आपकी महानता जो आपके स्थान को स्पष्ट करने वाली है। मूसा अलैहिस्सलाम के सपुर्द एक छोटा सा काम हुआ तो उन्होंने मददगार मांगा मगर आपके सपुर्द इस से बहुत बड़ा काम हुआ तो फ़रमाया में अकेले ही इस काम को सरअंजाम दूंगा और आपने कामयाब तौर पर वह काम सरअंजाम दे दिया। यह कितनी बड़ी महानता है जो आपको हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर हासिल है।

(4)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब अपने देश से निकले और फ़िरऔन ने आपका पीछा किया तो जैसा कि क़ुरआन करीम से साबित है आपकी क़ौम सख़्त घबरा गई और उसने समझा कि अब वह फ़िरऔन की गिरफ़्त से नहीं बच सकती। अत: उन्होंने चिल्ला कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ (शुअरा रुकूअ 4)हे मूसा हम तो पकड़े गए। इस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें कहा كَلَّا اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ(शुअरा रुकूअ 4)ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता , ख़ुदा तआला मेरे साथ है और वह हमें दुश्मनों के हमला से बचा लेगा। अत: ख़ुदा तआला ने उन्हें महफ़ूज़ रखा और फ़िरऔन अपने लश्कर समेत समुन्द्र में ग़र्क़ हो गया।

इसी तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हिजरत के वक़्त मक्का से निकले और ग़ारे सौर में पनाह ली तो दुश्मन एक अनुभवी खोजी का मार्गदर्शन में आपको तलाश करते-करते ठीक उस ग़ार के मुँह पर जा पहुंचा जिसमें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो के साथ छिपे हुए थे। इस वक़्त खोजी ने उन्हें कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) निसन्देह यहां छिपे हुए हैं और अगर वह इस ग़ार में नहीं तो फिर आसमान पर चले गए हैं। दुश्मन उस वक़्त आपसे इतना निकट था कि हज़रत अबूबकर रज़ि जो आप(स) के साथ थे घबरा गए। और उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह दुश्मन तो इस क़दर नज़दीक है कि अगर वह ज़रा झुक कर अंदर झाँके तो हमें देख सकता है। आपने उस वक़्त बड़े सन्तोष से जवाब दिया कि अबूबकर घबराते क्यों हो اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا(तौबा रुकूअ 6)अल्लाह तआला हमारे साथ है और वह हमारी मदद करेगा। अत: बावजूद उस के कि दुश्मन ठीक इस स्थान पर पहुंच गया जहां रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे फिर भी वह असफल वापस चला गया और वह आपको पकड़ने में नाकाम रहा। मानो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया कि ख़ुदा तआला मेरे साथ है और वह हमारी मदद करेगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यही कहा कि ख़ुदा तआला हमारे साथ है वह हमारी मदद करेगा लेकिन अगर ध्यान दिया जाए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दुश्मन का तबाह हो जाना इस तरह था कि दुश्मन अब भी कह देता है कि मूसा और आपकी क़ौम समुन्द्र से गुज़रे ही उस वक़्त थे जब भाटा का वक़्त था। जब टाईड का समय आया तो फ़िरऔन और इस के साथी डूब गए। इस में चमत्कार और निशान की कौन सी बात है। मगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला ने इस तरह बचाया कि दुश्मन आपके क़दमों के निशानों को देखता हुआ ग़ारे सौर पर पहुंचा और फिर भी वह आप(स) को न देख सका। हालाँकि उनका भरोसे वाला खोजी साथ था और उसने कहा भी कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यक़ीनन यहां छिपे हुए हैं और अगर वह यहां नहीं तो फिर आसमान पर चले गए हैं। मगर उस के इतना विश्वास दिलाने के बावजूद दुश्मन को इतनी तौफ़ीक़ न मिली कि वह झुक कर गुफा के अंदर देख ले और वह असफल वापस चला गया।

इसके बाद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गिरफ़्तार करने के लिए कुफ़्फ़ार मक्का ने एक सौ ऊंट का इनाम निर्धारित कर दिया। यह इतना बड़ा इनाम था कि इस को प्राप्त करने के लिए अरब चारों तरफ़ दौड़ पड़े। उन्होंने विचार किया कि अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहीं मिल गए तो सौ ऊंट मिल जाऐंगे और घर की हालत सुधर जाएगी। सौ ऊंट उस समय की दृष्टि से बड़ा भारी इनाम था बल्कि आजकल की दृष्टि से भी यह बड़ा भारी इनाम है। आजकल गर्वनमैंट मुजरिमों को पकड़ने के लिए पाँच-पाँच हज़ार या दस दस हज़ार रुपया इनाम रखती है। अगर सौ ऊंट की क़ीमत का अंदाज़ा इस ज़माना की दृष्टि से किया जाए तब भी कम से कम साठ सत्तर हज़ार रुपया का इनाम बनता है। अत: यह एक बहुत बड़ा इनाम था जिस को प्राप्त करने के लिए वैसे तो बहुत से लोग बाहर निकले लेकिन एक व्यक्ति संयोग से इस रास्ता पर जा पहुंचा जिस रास्ता पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे। इस आदमी ने आपको देख लिया और समझ लिया कि वह आपको पकड़ने में अब ज़रूर सफल हो जाएगा। जिस वक़्त वह क़रीब पहुंचा तो अचानक उसके घोड़े ने ठोकर खाई और घुटनों तक ज़मीन में धँस गया। उसने अरब के पुराने नियम के अनुसार इस अवसर पर फ़ौरन तीर निकाल कर फ़ाल ली कि मुझे आगे बढ़ना चाहिए या नहीं। फ़ाल निकली कि नहीं बढ़ना चाहिए मगर सौ ऊंट का इनाम था ,रह न सका। फिर एड़ लगा कर पास पहुंचा मगर फिर घोड़े ने ठोकर खाई और अब की बार पेट तक धँस गया। वह घबराया और समझा कि कोई और बात है। अत: वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में बहुत विनम्रता से हाज़िर हुआ और उसने निवेदन किया कि मैं अमान चाहता हूं। मैं अब समझ गया हूँ कि आप ख़ुदा तआला के नबी हैं। मैं आपके पीछे आया था मगर वापस जाता हूँ। मुझे विश्वास हो गया है कि आप ख़ुदा तआला के सच्चे नबी हैं और जब आप ख़ुदा तआला के सच्चे नबी हैं तो एक न एक दिन आप ज़रूर विजयी हो जाऐंगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मुझे एक काग़ज़ का पुर्ज़ा लिख दें ताकि जब ख़ुदा तआला आपको विजय प्रदान फ़रमाए तो मेरे साथ नेक व्यवहार किया जाए। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसी समय हज़रत अबूबकर रज़ि को हुक्म दिया और आपने उसे लिख कर दे दिया कि ख़ुदा तआला जब मुस्लमानों को विजय प्रदान करे तो इस शख़्स से नेक सुलूक किया जाए। मानो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरह सिर्फ एक घटना पेश नहीं आई ,आपके साथ दो बार यह घटना हुई कि दुश्मन ने आपको पकड़ने की कोशिश की मगर दोनों बार वह असफल रहा। फिर फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का पीछा किया तो उसने आपको देख लिया मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दुश्मन बावजूद पास पहुंच जाने के आपको देख भी नहीं सका। दूसरी बार जब दुश्मन ने आपको गिरफ़्तार करना चाहा तो उस समय भी वह असफल रहा। और न केवल असफल रहा बल्कि इस ने आपकी बरतरी को स्वीकार किया। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दुश्मन फ़िरऔन को ख़ुदा तआला उस वक़्त नज़र आया जब वह डूब रहा था। अत: क़ुरआन करीम में वर्णन आता है कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा मैं मूसा और हारून के ख़ुदा पर ईमान लाता हूँ। उस के जवाब मैं ख़ुदा तआला ने फ़रमाया तू आख़िरी वक़्त में ईमान लाया है अब तुझे मुक्ति तो नहीं दी जा सकती मगर तेरे शरीर को मुक्ति दे दी जाएगी ताकि तू दूसरों के लिए नसीहत का कारण हो। मगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़ने के लिए

जो दुश्मन निकला वह ज़िन्दा रहा और अपनी ज़िन्दगी में उसने स्वीकार कर लिया कि आप ख़ुदा तआला के सच्चे नबी हैं बल्कि उसने आपसे यह इक़रारनामा लिखवा लिया कि जब ख़ुदा तआला आपको ग़लबा प्रदान करे तो मुझसे हुस्न सुलूक किया जाए और फिर ख़ुदा तआला ने उसे आपके ग़लबा तक ज़िन्दा रखा और मुसलमानों ने इस से हुस्ने सुलूक किया। यह कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर है ।

(5)एक अन्तर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह भी है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का दुश्मन तो तबाह हुआ लेकिन दुश्मन के तबाह हो जाने के बाद उस के देश पर आपको ग़लबा नहीं हुआ। बेशक कई जाहिल उलमा यह कह देते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बाद में इस देश पर क़ब्ज़ा मिल गया था और एक आयत के ग़लत अर्थ कर के वे यह नतीजा निकालते हैं लेकिन इस का कोई सबूत नहीं मिलता। न क़ुरआन करीम से यह साबित होता है और ना ही बाईबल से साबित होता है। यूं ही कह देने से कि आपको मिस्र के देश पर ग़लबा हासिल हो गया था ,क्या बनता है। वास्तविकता यह है कि जैसा कि क़ुरआन करीम से साबित है बाद में वे जंगलों में फिरते रहे और अपनी मंज़िल को एक लंबे समय तक न पा सके। मगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मनों ने जब पराजय हुई तो आप उनके देश पर भी क़ाबिज़ हो गए और यह आपकी मूसा अलैहिस्सलाम पर प्राथमिकता है ।

(6)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब आपकी क़ौम ने कहा

(माइदा रुकूअ 4) اِذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ

तो ख़ुदा तआला ने फ़रमाया हे मूसा तेरी क़ौम ने बहुत बड़ी गुस्ताख़ी की है। इस गुस्ताख़ी के कारण से हम उसे इस विजय से वंचित करते हैं जिसका हमने वादा किया था। जाओ अब चालीस साल तक जंगलों में आवारा फिरो और अपने गुनाहों की माफियां माँगो। फिर अल्लाह तआला तुम्हें माफ़ कर देगा। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम को चालीस साल तक जंगलों में भटकने के बाद किनआन मिला। लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ौम को आपकी वफ़ात के बारह साल के समय में ही सारी सभ्य दुनिया पर हुकूमत मिल गई। यह भी एक बहुत बड़ी महानता है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर प्राप्त है।

(7)एक और विशेष गुण रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबला में यह प्राप्त है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सिलसिला ख़त्म हो गया मगर आपका सिलसिला कभी ख़त्म नहीं होगा। इस में कोई शंका नहीं कि मूसवी सिलसिला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माना तक लम्बा रहा बल्कि उस के बाद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना तक भी पहुंचा मगर सिर्फ नाम के तौर पर। वर्ना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के देहान्त के कुछ समय बाद ही लोग यह कहने लग गए थे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बड़े हैं बल्कि उन्होंने आपको ख़ुदा का बेटा क़रार देना शुरू कर दिया था लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं होगा और क़यामत तक चलता चला जाएगा।

(8)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के आख़िरी ख़लीफ़ा अर्थात मसीह नासरी की जमाअत ने आपको जवाब दे दिया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की अफ़ज़लीयत का इन्कार कर दिया। इस में कुछ दख़ल इस बात का भी था कि हज़रत मसीह ज़बान से कई ऐसे दो अर्थ वाले वाक्य निकले जिनसे आपकी क़ौम धोखा खा गई और वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को छोड़ बैठी। लेकिन हमारे सिलसिला के बानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो मुहम्मदी सिलसिला के आख़िरी ख़लीफ़ा हैं अगर कुछ कहा कि

वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फ़ैसला यही है

अर्थात मुझे जो भी गुण मिले हैं वे सब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी के कारण हैं। यह ख़्याल न करना कि मैं आपके मुक़ाबला की चीज़ हूं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने आपको ख़ुदा तआला का बेटा कहा लेकिन हमारे सिलसिला के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आख़िरी ख़लीफ़ा ने निहायत अदब के साथ कहा

वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फ़ैसला यही है

अर्थात मुझे अपने आक़ा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई तुलना ही नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक शेअर है जिस पर लोग एतराज़ करते हैं लेकिन हमें तो इस में लुतफ़ ही आता है। फ़रमाते हैं

इब्न मरियम के ज़िक्र को छोड़ो
इस से बेहतर ग़ुलाम अहमद है

इस पर लोग यह एतराज़ करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आपको इब्न मरियम रज़ि से उत्तम बताया है। हालाँकि आपने अपने आपको इब्न मरियम रज़ि से उत्तम नहीं बताया बल्कि अहमद अलैहिस्सालम के ग़ुलाम को उत्तम क़रार दिया है और इन दोनों मैं बहुत बड़ा अन्तर है। यहां अहमद से मुराद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और आप फ़रमाते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम से मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम भी बड़ा है और जिसका ग़ुलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से बड़ा हुआ और उत्तम हो वह स्वंय तो उन से कई दर्जा उत्तम होगा। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक यह भी महानता है कि मूसवी सिलसिला के आख़िरी ख़लीफ़ा की जमाअत ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अपने सिलसिला के संस्थापक से उत्तम क़रार दे दिया। मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आख़िरी ख़लीफ़ा ने अपने आक़ा की शान और महानता को क़ायम किया और इस ने दुनिया में बड़े ज़ोर से यह ऐलान किया कि हमने जो कुछ पाया है रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ान से ही पाया है।

(9)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद जितने नबी आए वह स्थायी नबी थे। यद्यपि कोई नई शरीयत नहीं लाए मगर नबुव्वत का स्थान उन्होंने सीधा प्राप्त हुआ था। मानो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के माध्यम के बिना उन्हें यह स्थान मिला था। मूसवी शिक्षा ऐसी न थी कि वह किसी को नबुव्वत के मुक़ाम तक पहुंचा सकती। मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सिले अल्लाह अलैहि वसल्लम को आप पर यह महानता प्राप्त है कि आप(स) के अनुकरण से चाहे नबी हों आप(स) के फ़ैज़ से नबी बनने वाले हैं और उन्हें जो कुछ मिलेगा मुहम्मद (स) फ़ैज़ से ही मिलेगा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अधीन तो थे मगर नबुव्वत के स्थान पर वह सीधा पहुंचे थे। मूसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा में यह ख़ूबी न थी कि वह किसी को नबुव्वत के स्थान तक पहुंचा सके लेकिन क़ुरआन मजीद में यह ख़ूबी पाई जाती है कि इस पर अनुकरण करने से इन्सान नबुव्वत के मुक़ाम पर भी पहुंच सकता है मगर वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन और क़ुरआन करीम का सेवक ही रहता है।

(10)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सोटा मिला। जो कई बार साँप बन जाता था जो एक काटने वाली चीज़ है। मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरआन की तलवार मिली जो हमेशा रहमत ही रहमत बनी रहती है। अल्लाह तआला इस तलवार का वर्णन करते हुए क़ुरआन करीम में फ़रमाता है

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا (फुर्क़ान रुकूअ 5)

तू क़ुरआन करीम को ले और इस से जिहाद करता चला जा। ज़ाहरी तलवारों की लड़ाइयां तो मामूली होती हैं और शीघ्र ख़त्म हो जाती हैं मगर क़ुरआन करीम एक ऐसी तलवार है जो दुश्मन के मुक़ाबला में हमेशा काम आने वाली है और जिसके प्रभाव रहमत के रूप में ही ज़ाहिर होते हैं। यही कारण है कि आपको बार-बार रहमतुन लिल्आलमीन कहा गया है और आप(स) ने शिक्षा भी ऐसी ही दी है जिसमें नर्मी और मुहब्बत को सज़ा और इंतिक़ाम पर प्राथमिकता दी गई है। जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा यह थी कि अगर तुम्हें कोई थप्पड़ मारे तो तुम भी उसे थप्पड़ मारो। अगर कोई शख़्स तुम्हारी आँख निकाल दे तो तुम भी इस की आँख निकाल दो। अगर कोई शख़्स तुम्हारा दाँत तोड़ दे तो तुम भी इस का दाँत तोड़ दो। मगर इस्लाम कहता है कि तुम जो भी क़दम उठाओ सोच समझ कर और हालात को देखकर उठाओ। अगर मस्लिहत इस में हो कि माफ़ कर दिया जाए तो अपने दुश्मन को माफ़ कर दो। उसे सज़ा देने पर इसरार न करो। क्योंकि तुम्हारा उद्देश्य केवल सुधार होना चाहिए न कि बदला।

(11) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को यदे बैज़ा का चमत्कार दिया गया था अर्थात आपका हाथ कभी-कभी चमका करता था लेकिन अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को سِرَاجًا مُّنِيْرًا (सूरः अल्अहज़ाब रुकूअ 6) कहा है और सूरज सारा चमका करता है इस का कोई एक हिस्सा नहीं चमका करता मानो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सिर्फ हाथ चमका करता था मगर आप(स) का सारा जिस्म रोशन और मुनव्वर था। फिर सूरज हर वक़त रोशनी देता है कभी-कभार नहीं। मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का हाथ सिर्फ कभी कभी चमकता था अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त मामलों में राहनुमा थे और हर वक़त आपकी राहनुमाई क़ायम रहने वाली है यह नहीं कि कभी ख़त्म हो जाए और कभी शुरू जाए।

(12)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सिर्फ बनी इस्राईल की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया था लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ

(सबा रुकू 3) हम ने तुझे सारी मानव जाति को एक हाथ पर जमा करने के लिए भेजा है। यह भी आपकी फ़ज़ीलत और बरतरी की एक रोशन दलील है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 10 पृष्ठ 251)

☆ ☆ ☆

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए
अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

पृष्ठ 18 का शेष

तालिब की जुदाई निहायत दुखी करती थी। अतः रवानगी के वक़्त जोश मुहब्बत में आप(स) अबू तालिब से लिपट गए और रोने लगे। यह हालत देखकर अबू तालिब का दिल भर आया और वह आप(स) को भी अपने साथ ले गए।

शाम के दक्षिण में बसरा एक प्रसिद्ध स्थान है, वहां पहुंचे तो एक अजीब घटना पेश आई। वहां एक ईसाई राहिब रहता था जिसका नाम बहीरा था। जब क़ुरैश का क़ाफ़िला उस की ख़ानक़ाह के पास पहुंचा तो इस राहिब ने देखा कि समस्त पत्थर और दरख़्त इत्यादि अचानक सिज्दा में गिर गए। उसे मालूम था कि इलाही भविष्यवाणियों की दृष्टि से एक नबी मबऊस होने वाला है इसलिए इस ने अपनी फ़िरासत से समझ लिया कि इस क़ाफ़िला में वही नबी मौजूद होगा। अतः इस ने अपने क़ियाफ़ा से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचान लिया और इस से अबू तालिब को सूचना दी और अबू तालिब को नसीहत की कि आप(स) को अहले किताब की बुराइयों से महफ़ूज़ रखें

इल्म रिवायत की दृष्टि से इस घटना की सनद कमज़ोर है लेकिन अगर वास्तव में इस तह की घटना हुई है तो कुछ आश्चर्य भी नहीं। दरख़्तों इत्यादि का सिज्दा करना राहिब का एक कशफ़ी नज़ारा समझा जाएगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम के लिहाज़ से कोई ग़ैरमामूली बात नहीं।

आप(स) का बकरियां चराना

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब शाम के सफ़र से वापस आए तो अबूतालिब के पास ही रहते थे मगर चूँकि अरब में बच्चों को प्राय मवेशी चुराने के काम पर लगा देते थे इस लिए इस ज़माना में आप(स) ने भी कभी कभी यह काम किया और बकरियां चराईं। ज़माना नबुव्वत में फ़रमाया करते थे कि बकरियां चराना भी अंबया की सुन्नत है और मैं ने भी बकरियां चराई हैं। अतः एक अवसर पर सफ़र में आप(स) के अस्हाब जंगल में पीलू जमा कर के खाने लगे तो आप(स) ने फ़रमाया। काले-काले पीलू तलाश कर के खाओ। क्योंकि जब मैं बकरियां चराया करता था तो उस वक़्त का मेरा तजुर्बा है कि काले रंग के पीलू ज़्यादा उम्दा होते हैं

बुराइयों से ख़ुदाई हिफ़ाज़त

इसी ज़माना की एक घटना है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रात अपने साथी से कहा जो बकरियां चराने में आप(स) का साझी था कि तुम मेरी बकरियों का ख़्याल रखो ताकि में ज़रा शहर जाकर लोगों की मज्लिस देख आऊँ। इन दिनों में नियम था कि रात के वक़्त लोग किसी मकान में जमा हो कर कहानियां सुनाते और शेअर ग़ज़ल का शुग़्ल किया करते थे और कई बार इसी में सारी-सारी रात गुज़ार देते आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी बचपन के शौक़ में यह तमाशा देखने गए। परन्तु अल्लाह तआला को इस व्यर्थ काम में ख़ातमनबिय्यीन की शिरकत पसंद न आई। अतः एक जगह आप(स) गए मगर रास्ते में ही नींद आ गई और सो गए और सुबह तक सोते रहे। एक बार और आप(स) को यही ख़्याल आया मगर फिर भी ग़ैबी हाथ ने रोक दिया। ज़माना नबुव्वत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि मैंने सारी उम्र में केवल दो बार इस किस्म की मज्लिस में शिरकत का इरादा किया, मगर दोनों बार रोक दिया गया।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन,पृष्ठ 93)

☆ ☆ ☆

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जीवन चरित्र

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़ि अल्लाह अन्हो के क़लम से

आरम्भिक ज़िन्दगी

सौभाग्य वाला जन्म

आमना के नूर के ज़हूर का वक़्त नज़दीक आ रहा था और बच्चा के जन्म के दिन क़रीब थे। वह शुअबे बनी हाशिम में रहती थीं और उस वक़्त के इंतिज़ार में थीं कि जब उन के स्वर्गीय पति की याद को ज़िन्दा रखने वाला बच्चा दुनिया की रोशनी में आए और उनके सदमा पहुंचे हुए दिल के लिए तसकीन तथा आराम का कारण हो। अत: अस्हाबे फ़ील की घटना के पच्चीस दिन बाद 12 रबीउल अव्वल अनुसार 20 अगस्त 570 ईसवी को या एक नई और शायद सही अनुसन्धान के अनुसार 9 रबीउल अव्वल अनुसार 20 अप्रैल 571 ई सोमवार के दिन सुबह के समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ। फ़ील की घटना के इस क़दर जुड़े होने के कारण आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म होना अपने अन्दर ख़ुदाई इशारा रखता था कि जिस तरह ख़ुदा ने काबा के ख़िलाफ़ इस ज़ाहिरी हमला को असफल किया है इसी तरह अब वक़्त आता है कि अल्लाह तआला का धर्म के मुक़ाबला पर झुठी चीज़ों की उपासना का सिर कुचला जाए और क़ुरआन शरीफ़ में अस्हाब अलफ़ील के हमला का ज़िक्र भी बज़ाहिर इसी उद्देश्य के अधीन नज़र आता है। बहरहाल बच्चा के पैदा होते ही आमना ने अब्दुल मुतलिब को सुचना भिजवा दी जो सुनते ही फ़ौरन ख़ुशी के जोश में आमना के पास चले आए। आमना ने उन के सामने लड़का पेश किया और कहा कि मैं ने एक ख़्वाब में इस का नाम मोहम्मद देखा था। अब्दुल मुतलिब बच्चे को अपने हाथों में उठा कर बैयतुल्लाह में ले गए और वहां जाकर ख़ुदा का शुक्र अदा किया और बच्चे का नाम मुहम्मद रखा जिसके अर्थ हैं "बहुत प्रशंसा योग्य" और फिर उसे वापस लाकर ख़ुशी ख़ुशी माँ के सुपुर्द कर दिया

इतिहासकारों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जन्म के बारे में कई अदभुत घटनाएं लिखी हैं। जैसे यह कि इस वक़्त किसरा शहंशाह ईरान के महल में सख़्त भूकम्प आया और इस के चौदह कंगरे गिर गए और फ़ारस का पवित्र जलने वाली जो सदियों से बराबर रोशन चला आता था अचानक बुझ गया और कई दरिया और चश्मे ख़ुश्क हो गए और यह कि आपके अपने घर में भी कई प्रकार के करिश्मे प्रकट हुए इत्यादि। मगर ये रिवायतें प्राय कमज़ोर हैं। यह भी रिवायत आती है जो शायद सही है कि आप(स) के जन्म के ज़माना में आसमान पर ग़ैरमामूली प्रचुरता के साथ सितारे टूटते हुए नज़र आते थे। इसी तरह एक रिवायत ये भी है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुदरती तौर पर मख़्तून पैदा हुए। अगर यह दरुस्त हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि कई बार बच्चों में इस किस्म की क़ुदरती बातें देखी गई हैं। एक और बात भी आप में क़ुदरती तौर पर थी और वह यह कि आपकी पीठ पर बाईं तरफ एक गोश्त का उठा हुआ टुकड़ा था जो आम तौर पर मुस्लमानों में ख़त्मे नबुव्वत अर्थात मुहर नबुव्वत के नाम से मश्हूर है।

दूध पीने और बचपन के दिन

मक्का के शरीफ़ों में यह नियम था कि माएं अपने बच्चों को ख़ुद दूध न पिलाती थीं बल्कि आम तौर पर बच्चे शहर से बाहर देहाती लोगों में दाइयों के सुपर्द कर दिए जाते थे उस का यह लाभ होता था कि जंगल की खुली हवा में रह कर बच्चे तंदरुस्त और ताक़तवर होते थे और भाषा भी उम्दा और साफ़ सीखते थे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शुरू शुरू में आपकी माता ने और फिर सुवैबा ने दूध पिलाया। सुवैबा आप(स) के चाचा अबू लहब की लौंडी थी जिसे अबू लहब ने अपने यतीम भतीजा के जन्म की ख़ुशी में आज़ाद कर दिया था। इसी सुवैबा ने हज़रत हमज़ा रज़ि को भी दूध पिलाया था। मानो इस तरह हमज़ा जो आप(स) के वास्तविक चाचा थे दूध के रिश्ता से आपके भाई बन गए। सुवैबा की यह कुछ दिन की सेवा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी नहीं भूले। जब तक वह ज़िन्दा रही आप(स) हमीशा उस की मदद फ़रमाते रहे और इस के मरने के बाद भी आप(स) ने पूछा कि क्या उस का कोई रिश्तेदार बाक़ी है। मगर मालूम हुआ कि कोई न था

सुवैबा के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दूध पिलाना स्थायी तौर पर हलीमा के सुपुर्द हुआ जो क़ौम हवाज़िन के क़बीला बनी साद की एक औरत थी और दूसरी औरतों के साथ मिलकर मक्का में दाया के तौर पर किसी बच्चे की तलाश में आई थी। एक यतीम बच्चे को अपने साथ ले जाते हुए हलीमा आरम्भ में ख़ुश न थी, क्योंकि उस की इच्छा थी कि कोई ज़िन्दा बाप वाला बच्चा मिले जहां अधिक इनाम की आशा हो सकती थी। अत: शुरू में इस ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने साथ ले जाने से मना किया मगर जब कोई और बच्चा न मिला और इस के साथ की सब औरतों को बच्चे मिल चुके थे तो वह ख़ाली हाथ जाने से बेहतर समझ कर आप(स) को अपने साथ ले गई लेकिन शीघ्र ही हलीमा को मालूम हो गया कि जो बच्चा वह अपने साथ लाई है। इस का सितारा बहुत बुलंद है। अत: उस की अपनी रिवायत है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने से पहले हम पर बहुत तंगी का वक़्त था, मगर आपके आने के साथ यह तंगी फ़राख़ी में बदल गई और हमारी हर चीज़ में बरकत नज़र आने लगी। हलीमा का वह लड़का जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दूध पीता था उस का नाम अब्दुल्लाह था उस की एक बड़ी बहन भी थी जिसका नाम शीमा था जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत अज़ीज़ रखती थी

दो साल के बाद जब दूध पिलाने का समय पूरा हुआ तो नियम के अनुसार हलीमा आप(स) को लेकर मक्का में आई मगर उसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इतनी मुहब्बत हो चुकी थी कि इस का दिल चाहता था कि अगर मुम्किन हो तो आपकी माता से इजाज़त लेकर आप(स) को फिर वापस ले जाए। अत: इस ने ज़ोर देकर कहा कि अभी इस बच्चा को कुछ समय और मेरे पास रहने दो। मैं इस का हर तरह ख़्याल रखूँगी। आमना ने पहले तो इन्कार किया, मगर फिर उस के इसरार को देखकर और यह विचार कर के कि मक्का की हवा से बाहर की हवा अच्छी है और उन दिनों में मक्का की हवा कुछ ख़राब भी थी आमना ने मान लिया और हलीमा आप(स) को लेकर फिर ख़ुश ख़ुश अपने घर लौट गई और इस के बाद लगभग चार साल की उम्र तक आप(स) हलीमा के पास रहे और क़बीला बनू सअद के लड़के लड़कियों में खेल कूद कर

बड़े हुए। इस क़बीला की ज़बान खासतौर पर साफ़ और फ़सीह थी और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यही भाषा सीखी।

हलीमा आप(स) को बहुत अज़ीज़ रखती थी और क़बीला के समस्त लोग आप(स) को मुहब्बत की नज़र से देखते थे लेकिन जब आपकी उम्र चार साल की हुई तो एक ऐसी घटना हुई जिसके कारण से हलीमा भयभीत हो गई और आप(स) को वापस मक्का में लाकर आप(स) की माता के सपुर्द कर दिया। यह घटना तारीख़ में इस तरह पर वर्णित है कि एक बार आप(स) आपने दूध भाई के साथ मिलकर खेल रहे थे और कोई बड़ा आदमी पास न था कि अचानक दो सफेद कपड़ा पहने आदमी नज़र आए और उन्होंने आप(स) को पकड़ कर ज़मीन पर लिटा दिया और आप(स) का सीना खोल दिया। यह नज़ारा देखकर आप(स) का भाई अब्दुल्लाह बिन हारिस भागा हुआ गया और अपने माँ बाप को सूचना दी कि मेरे क़ुरैशी भाई को दो आदमियों ने पकड़ लिया है और इस का सीना खोल कर रहे हैं। हारिस और हलीमा यह सुनते ही भागे आए तो देखा कि कोई आदमी तो वहां नहीं है, मगर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भयभीत हालत में खड़े हैं और चेहरा का रंग बदल रहा है। हलीमा ने आगे बढ़कर आप(स) को गले से लगा लिया और पूछा "बेटा क्या बात हुई है? आप ने सारा माजरा बताया और कहा कि वह कोई चीज़ मेरे सीना में तलाश करते थे। जिसे उन्होंने निकाल कर फेंक दिया। फिर हलीमा और हारिस आप(स) को अपने ख़ेमा में ले गए और हारिस ने हलीमा से कहा। "मुझे डर है कि इस लड़के को कुछ हो गया है। अत: उचित है कि तू इसे फ़ौरन ले जा और इस की माता के सुपुर्द कर आ।" अत: हलीमा आपको मक्का में लाई और आमना के सुपुर्द कर दिया। आमना ने इस जल्दी का कारण पूछा और इसरार किया तो हलीमा ने उन्हें यह सारी घटना सुना दिया और यह डर ज़ाहिर किया कि शायद यह लड़का किसी जिन इत्यादि के प्रभाव के नीचे आ गया है। आमना ने कहा। "ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। मेरा बेटा बड़ी शान वाला है। जब यह गर्भ में था तो मैंने देखा था कि मेरे अंदर से एक नूर निकला है जो दूर दराज़ देशों तक फैल गया है।

इस घटना का समर्थन सही मुस्लिम की एक रिवायत से भी होता है जिसमें अनस रज़ि बिन मालिक वर्णन करते हैं कि एक बार जब कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कई बच्चों के साथ मिल कर खेल रहे थे आप(स) के पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और आप(स) को ज़मीन पर लिटा कर आप(स) का सीना खोल दिया और फिर आप(स) के सीना के अंदर से आप(स) का दिल निकाला और इस में से कोई चीज़ निकाल कर बाहर फेंक दी और साथ ही कहा कि यह कमज़ोरियों की मिलावट थी जो अब तुमसे जुदा कर दी गई है। इसके बाद जिब्राईल ने आप(स) के दिल को साफ सुथरे पानी से धोया और सीना में वापस रखकर उसे फिर जोड़ दिया। जब बच्चों ने जिब्राईल को आप(स) को ज़मीन पर गिराते और सीना खोलते हुए देखा तो वह घबरा कर दौड़े हुए आप(स) की दाई के पास गए और कहा कि मुहम्मद को किसी ने क़त्ल कर दिया है। जब ये लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे तो फ़रिश्ता ग़ायब था और आप(स) एक ख़ौफ़ज़दा हालत में खड़े थे। सही मुस्लिम की तसदीक़ के बाद इब्न हश्शाम की रिवायत को एक ऐसी तक़वियत हासिल हो जाती है कि बिना किसी मज़बूत दलील के हम उसे कमज़ोर कह कर रद्द नहीं कर सकते। मगर ज़ाहिर है कि यह घटना एक कशफ़ी नज़ारा था। अत: सीना को खोलने की ज़ाहिरी निशानी का दूर होना अर्थात उस वक़्त आप(स) की दाई इत्यादि को इस की किसी ज़ाहरी निशान का नज़र न आना भी यही ज़ाहिर करता है कि यह एक कश्फ़ था जिसका दायरा दूसरे बच्चों तक भी वसीअ हो गया और जैसा कि ख़ुद इस कशफ़ के अन्दर व्याख्या है इस से मुराद यह थी कि ख़ुदाई फ़रिश्ता ने प्रकट हो कर कशफ़ की अवस्था में आप(स) का सीना खोल दिया और समस्त कमज़ोरियों की मिलावट आपके अंदर से निकाल दी। सहीह हदीसों से साबित है कि मेराज की रात भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इसी तरह का सीना खोलने सदर की घटना हुई और फ़रिश्तों ने आपका दिल निकाल कर ज़मज़म के साफ पानी से धोया और फिर अपनी जगह पर रख दिया।

इस जगह यह ज़िक्र करना भी अनुचति न होगा कि सर विलियम म्यूर ने इस घटना का वर्णन कर के ताने के रंग में यह नोट किया है कि नऊज़ बिल्लाह यह एक मिर्गी का दौरा था जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुआ। हम किसी की ज़बान को तो नहीं रोक सकते मगर यक़ीनन म्यूर साहिब ने यह एतराज़ करते हुए अत्यधिक स्तर के द्वेष से काम लिया है। क्योंकि पहले तो सब लोग जानते हैं कि मिर्गी का बीमार एक कमज़ोर दिमाग़ वाला इन्सान होता है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ख़ुद म्यूर साहिब को इक़रार है कि आप(स) बेहतरीन जिस्मानी अंगों के मालिक थे। इस के अतिरिक्त ख़ुद यह रिवायत भी जिसकी बिना पर यह एतराज़ किया गया है इस एतराज़ का रद्द करती है। क्योंकि रिवायतों में यह साफ़ लिखा है कि इस नज़ारा को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध भाई ने भी देखा और इसी ने भाग कर अपने माता पिता को सूचना दी कि मेरे क़ुरैशी भाई को दो सफेद कपड़ा पहने आदमी ज़मीन पर गिरा कर उस का सीना खोल रहे हैं। क्या दुनिया में कोई मिर्गी ऐसी भी होती है जिसके बारे में दूसरे लोग इस किस्म के नज़ारा की गवाही दें। बेशक वह आदमी जिसे मिर्गी का दौरा पड़ता है वह ख़ुद अपने विचार में यह गुमान कर सकता है कि उसे किसी ने पकड़कर ज़मीन पर दे मारा है लेकिन यह कि उसे देखने वाले लोग भी इस किस्म का नज़ारा देखें यह एक ऐसी बात है जिसे सिवाए एक द्वेष वाले इन्सान के कोई आदमी ज़बान पर नहीं ला सकता

बहरहाल जब आप(स) की उम्र चार साल की हुई तो हलीमा आपको वापस लाकर आप(स) की माता के सुपुर्द कर गई। यह चार साल की हलीमा की सेवा कोई मामूली ख़िदमत न थी और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो छोटी से छोटी सेवा को भी फ़रामोश न करते थे। अत: आप(स) ने उम्र-भर हलीमा की यह सेवा याद रखी और हमेशा उस के साथ निहायत उच्च सुलूक किया। अत: जब देश में एक बार अकाल पड़ा और हलीमा मक्का में आई तो आप(स) ने उसे चालीस बकरियां और एक ऊंट प्रदान फ़रमाया। ज़माना नबुव्वत में वह एक बार आई तो आप(स) ने उसे देखते ही ''माँ ! मेरी माँ!!' कहते हुए उठ खड़े हुए और अपने ऊपर की चादर उतार कर उस के नीचे बिछाई। फिर जब एक जंग (अर्थात जंग हुनैन) में क़बीला हवाज़िन के हज़ार क़ैदी पकड़े हुए आए तो आपने उसी रिश्ता के लिए इन सबको रिहा कर दिया और एक पाई भी इन क़ैदियों के फ़िद्या में नहीं ली। और अपनी एक रज़ाई बहन को जो इन क़ैदीयों में आई थी इनाम से माला-माल कर के वापस किया। हलीमा और इस के पति हारिस के इस्लाम लाने के बारे में मतभेद है, मगर अधिक प्रमाणिक बात यही है कि वे दोनों मुस्लमान हो गए थे और इस्लाम की हालत में फ़ौत हुए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध भाई अब्दुल्लाह और बहन शीमा ने भी इस्लाम पर वफ़ात पाई

माता की कफ़ालत और यसरब का सफ़र

जब हलीमा आप(स) को आप(स) की माता के पास वापस लाई तो आप(स) की उम्र चार साल की थी। इस के बाद आप(स) अपनी माता की निगरानी में रहे। जब आप(स) की उम्र छ: साल की हुई तो अपने रिश्तेदार बनू नज्जार से मिलने के लिए से आमना यसरब गईं और आप(स) को भी साथ ले गईं। उम्मे एमन भी साथ थी। संभव है इस सफ़र में आमना को अपने मरहूम शौहर के मज़ार देखने का भी ख़्याल हो। बहरहाल वह यसरब गईं और वहां लगभग एक महीना तक निवास किया।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ज़माना आख़िर उम्र तक याद रहा। क़रीबन पच्चास साल के बाद जब आप(स) हिजरत कर के मदीना गए तो आप(स) ने सहाबा को वह मकान बताया जहां आप(स) अपनी माता के साथ ठहरे थे और वह जगह बताई जहां आप(स) मदीना के बच्चों के साथ मिलकर खेला करते थे और वह तालाब भी दिखाया जहां आप(स) ने तैरने की मश्क़ थी।

माता का देहान्त

लगभग एक माह के निवास के बाद आमना वापस रवाना हुईं मगर अपने शौहर की तरह उन की मौत भी परदेस में ही मुक़द्दर थी अत: रास्ता में ही बीमार हो गईं और मुक़ाम अबवा में देहान्त किया और यहीं दफ़न की गईं। ज़माना नबुव्वत में जब आप(स) एक बार इस मुक़ाम पर से गुज़रे तो अपनी माता की क़ब्र पर भी तशरीफ़ ले गए और उसे देखकर रोने लगे। सहाबा ने यह नज़ारा देखा तो वे भी रोने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया। "मुझे यह तो इजाज़त दी कि मैं अपनी माता की क़ब्र को देखूं लेकिन दुआ करने की इजाज़त नहीं दी। इस से यह न समझना चाहिए कि आपकी माता की मग़फ़िरत न होगी। क्योंकि मामला ख़ुदा के हाथ में है और इस के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता कि क्या होगा और क्या ना होगा। लेकिन इस से सिर्फ यह पता चलता है जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरे अवसरों पर फ़रमाया है कि जो शख़्स शिर्क की हालत में फ़ौत हो इसके लिए दुआ माँगना दुरुस्त नहीं है बल्कि उस के मामला को ख़ुदा के सुपुर्द करना चाहिए।

माता का देहान्त हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अनाथ की पूरी पूरी हालत में आ गए और छोटी उम्र में वतन से बाहर माता पिता से दूर माँ की जुदाई का सदमा ऐसी हालत में कि बाप पहले ही गुज़र चुका हो कोई मामूली सदमा नहीं। अत: इन बातों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल पर एक गहरा और स्थायी प्रभाव डाला। बेशक आप दुनिया की तरफ़ रहमतुन्न-लिन्नास न बना कर मबऊस किए गए। मगर ज़ाहिरी कारणों के लिहाज़ से उन बातों का भी आप(स) की तबीयत पर बहुत प्रभाव हुआ और एक हद तक ये इन्हीं आरम्भिक सदमों का नतीजा था कि आप(स) के आचरण में गरीबों की मुहब्बत और मुसीबत वालों के साथ हमदर्दी ने एक ख़ास स्पष्ट रूप धारण किया। क़ुरआन शरीफ़ ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यतीमी का इन शब्दों में वर्णन किया है:

اَلَمۡ يَجِدۡكَ يَتِيۡمًا فَاٰوٰى ۪ۙ وَ وَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪ۙ وَ وَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغۡنٰى ؕ فَاَمَّا الۡيَتِيۡمَ فَلَا تَقۡهَرۡ ؕ

(अज़्ज़ुहा 7 से10)

अर्थात क्या हमने तुझे यतीम पाकर पनाह नहीं दी। अत: अब तेरा फ़र्ज़ है कि तो भी यतीमों के साथ दया और नर्मी का सुलूक करे।

अब्दुल मुतलिब का संरक्षण

माता के देहान्त के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी ख़ादिमा उम्मे एमन के साथ मक्का पहुंचे। यह उम्मे एमन वही है जो आप(स) के माता की वफ़ात पर एक लौंडी की हैसियत में आप(स) को विरसा में पहुंची थी। बड़े हो कर आप(स) ने उसे आज़ाद कर दिया था और इस के साथ बहुत उपकार का सुलूक फ़रमाते थे। बाद में उम्मे एमन की शादी आपके आज़ाद किए ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा के साथ हो गई और उसके बतन से उसामा बिन ज़ैद पैदा हुए। उम्मे एमन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद तक ज़िन्दा रही। बहरहाल माता की वफ़ात के बाद आप(स) उम्मे एमन के साथ मक्का पहुंचे और वहां पहुंच कर आप को अब्दुल मुतलिब ने सीधा अपनी कफ़ालत में ले लिया। अब्दुल मुतलिब आप(स) को बहुत प्रिय रखते थे। ख़ाना कअबा का तवाफ़ करते तो आप(स) को अपने कंधे पर बिठा लेते। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उन के साथ बहुत बे-तकल्लुफ़ हो गए। अब्दुल मुतलिब की आदत थी कि सेहन कअबा में फ़र्श बिछा कर बैठा करते थे और किसी की मजाल न थी कि इस फ़र्श पर उनके साथ बैठ सके। यहां तक कि अब्दुल मुतलिब के अपने लड़के भी हट कर बैठते थे मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी मुहब्बत के जोश में सीधे अब्दुल मुतलिब के पास जा बैठते थे और वह आप(स) को देखकर ख़ुश होते थे। आप(स) के चाचा कई बार आप(स) को फ़र्श पर बैठने से रोकते तो अब्दुल मुतलिब उनको मना कर देते और कहते कि उसे तुम कुछ न कहो।

अब्दुल मुतलिब का देहान्त

इसी मुहब्बत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिन गुज़र रहे थे कि अब्दुल मुतलिब को भी मौत का पैग़ाम आ गया जब उनका जनाज़ा उठा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साथ-साथ थे और रोते जाते थे। यह तीसरा सदमा था जो आपको बचपन में उठाना पड़ा। इस वक़्त आप(स) की उम्र आठ साल की थी और अब्दुल मुतलिब की उम्र रिवायतों के मतभेद के साथ 80 साल से लेकर एक सौ चालीस साल की थी।

विभिन्न पत्नियों से अब्दुल मुत्लिब के कई बेटे थे जिनमें से अधिक प्रसिद्ध के नाम यह हैं। हारिस, ज़ुबैर, अबू तालिब, अबू लहब, अब्दुल्लाह, अब्बास और हमज़ा। उनमें अबू तालिब और अब्दुल्लाह की माँ एक थी और शायद इसी कारण से अब्दुल मुतलिब ने मरते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबू तालिब के संरक्षण में दिया और उनको आप(स) का विशेष ख़्याल रखने की वसीयत की। अत: उस वक़्त से आप(स) आपने चाचा अबू तालिब के संरक्षण में रहने लगे। क़ौमी कामों में से पानी पिलाना और रफ़ादा का काम जो अब्दुल मुत्लिब के पास था वह उन्होंने अपने ज़िन्दा लड़कों में से बड़े लड़के ज़ुबैर के सुपुर्द किया। मगर चूँकि यह काम बहुत सा रुपया चाहता था इस लिए ज़ुबैर ने अपनी ताक़त से ज़्यादा देखकर दोनों काम अबू तालिब के सुपुर्द कर दिए लेकिन अबू तालिब भी ग़रीब आदमी थे इस लिए रफ़ादा का काम बनू नौफ़ल की तरफ़ मुंतक़िल हो गया और सकाया का काम अबू तालिब ने अन्त में अब्बास के सुपुर्द कर दिया जो तुलनात्मक रूप से एक अमीर आदमी थे

इस अवसर पर यह वर्णन करना भी ज़रूरी है कि अब्दुल मुतलिब की ज़िन्दगी तक तो बनू हाशिम निहायत सम्माननीय थे और मानो समस्त क़ुरैश के कबीलों में मुमताज़ हैसियत रखते थे लेकिन उनकी वफ़ात के बाद बनू हाशिम में से कोई ऐसा शख़्स न निकला जो इस सम्मान को क़ायम रख सके इसलिए क़ुरैश की आम सरदारी उनके हाथ से निकल गई और बनू हाशिम के शत्रु बनू उमय्या धीरे- धीरे बहुत ज़ोर पकड़ गए।

अबू तालिब की कफ़ालत

अबू तालिब ने अपने पिता की वसीयत पर निहायत दयानत और ख़ूबी से अमल किया और अपने बच्चों से बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अज़ीज़ रखा। हरवक़त अपनी आँखों के सामने रखते थे और रात के वक़्त भी प्राय अपने साथ ही सुलाते थे।

सफ़र शाम और बहीरा राहिब की घटना

जब आप(स) की उम्र बारह साल की हुई तो अबू तालिब को एक व्यापारिक क़ाफ़िला के साथ शाम का सफ़र करना पड़ा। चूँकि सफ़र लंबा और कठिन था इसलिए उन्होंने इरादा किया कि आप(स) को मक्का ही में छोड़ जाएं। मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबू

शेष पृष्ठ 15पर

पृष्ठ 1 का शेष

आप वहाँ सो गए। जब जागे तो फिर मुट्ठी भर खजूरें खाईं। आप ने उन में से कुछ खाईं फिर खड़े हुए और यहूदी से फिर बात की लेकिन वह नहीं माना। आप ने फिर से उद्यान का चक्कर लगाया और मुझसे कहा जाबिर खजूरों के फलों को तोड़ना शुरू करो और यहूदी का कर्ज़ अदा करो। मैंने फल तोड़ना शुरू किया इस बीच आप खजूर के पेड़ों में खड़े रहे। कहते हैं मैंने फल तोड़कर यहूदी का सारा कर्ज़ अदा कर दिया और कुछ खुजूर बच गईं। मैंने हुज़ूर की सेवा में यह सुसमाचार निवेदन किया तो आपने फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 5443)

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अतअमः बाबुल रतब वत्तमर .... हदीस 5443 उद्धरित ख़ुत्बा जुमा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला 30 मार्च 2018 ई)

हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाह अन्ना से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत शफ़क़त और हमदर्दी की एक अन्य घटना प्रस्तुत है। हज़रत जाबिर रज़ि ने कहा कि मैं एक जंग में आप के साथ था। हज़ूर मेरे क़रीब तशरीफ़ लाए और पूछा कि तुम्हारे ऊंट को क्या हुआ जो चल नहीं रहा। मैंने निवेदन किया हुज़ूर यह चलने से असमर्थ हो चुका है । हज़ूर ने उसे हाँकना शुरू फ़रमाया और साथ साथ दुआ भी फ़रमाते रहे यहां तक कि यह ऊँट तेज़ चलने लगा इस पर हज़ूर ने फ़रमाया अब तुम्हारा ऊँट कैसा है ? मैंने निवेदन किया हुज़ूर आप की बरकत और दुआ के कारण से अब तेज़ चलने लगा है । हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम इसे बेचोगे ? हज़रत जाबिर वर्णन करते हैं कि मेरे पास पानी लाने के लिए इस ऊंट के इलावा कोई और ऊंट नहीं था लेकिन मैंने शर्म करके कह दिया कि इस को फ़रोख़त करूँगा। हज़ूर ने फ़रमाया अच्छा उसे मेरे पास बेच दो । मैंने इस ऊंट को हज़ूर के पास इस शर्त पर बेच दिया कि मदीना तक इस पर सवार हो कर जाऊँगा। सफर के दौरान मैंने हज़ूर से निवेदन किया कि हुज़ूर मेरी नई नई शादी हुई है मुझे मदीना पहुंचने की इजाज़त दें। हुज़ूर ने मुझे इजाज़त दी और मैं दूसरे लोगों से पहले मदीना में आ गया। रास्ता में मुझे मेरे मामूं मिले उन्होंने ऊंट के बारे में पूछा कि यह मरियल ऊंट अब तेज़ किस तरह चलने लगा । मैंने सारी घटना उन्हें सुना दी तो मामूं ने मुझे बुरा भला कहा।

हज़ूर से जब मेंने इजाज़त मांगी तो हज़ूर ने मुझ से पूछा कि तुम ने शादी कुँवारी लड़की से की है या विधवा औरत से। मैं ने अर्ज़ किया। हुज़ूर विधवा औरत से शादी की है। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया तुमने किसी कुँवारी लड़की से शादी करनी थी, वह तुम से खेलती और तुम इस से खेलते। मैंने निवेदन किया। हुज़ूर पिता शहीद हो गए और पीछे मेरे लिए कई छोटी छोटी बहनें छोड़ गए हैं। इस लिए मैं ने पसंद नहीं क्या कि इन्ही जैसी में बीवी घर ले आऊँ और उनकी देख-भाल और निगरानी करने वाला कोई न हो। जब हज़ूर मदीना तशरीफ़ लाए। मैं सुबह सुबह ऊंट लेकर हाज़िर हुआ। हज़ूर ने मुझे उस की क़ीमत भी अता फ़रमाई और ऊंट भी (तोहफा में) दे दिया

(बुख़ारी किताबुल जिहाद बाब इस्तेज़ान अलर्जल अल-इमाम, बहवाला हदीकतुस्सलेहीन हदीस नम्बर 357)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत नअैमान बिन अमरो थे। यह बैअत उक़बा सानिया में सत्तर अन्सार के साथ शामिल थे। हज़रत नअैमान तमाम जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नअैमान के लिए सिवाए ख़ैर के कुछ न कहो क्योंकि वह अल्लाह और इस के रसूल से मुहब्बत रखता है। कहते हैं कि उनकी तबीयत में भी मज़ाक पाया जाता था। हदीस में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक बद्दू आया और मस्जि द में दाख़ि ल हो कर उसने अपने ऊंट को सेहन में बिठा दि या। इस पर कुछ सहाबा ने हज़रत नुअमान रज़ि से कहा कि अगर तुम इस ऊंट को ज़िब्ह कर दो तो हम उसे खाएँगे क्योंकि हमें गोश्त खाने का बड़ा दिल कर रहा है। और बहरहाल यह बद्दू का ऊंट है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जब शिकायत होगी तो फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस का बदला अदा कर देंगे। रावी कहते हैं कि हज़रत नुअमान रज़ि ने उनकी बातों में आ कर ऊंट ज़िब्ह कर दि या और जब बद्दू बाहर निकला और अपनी सवारी को इस हालत में देखा तो शोर मचाने लगा कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम !मेरा ऊंट ज़िब्ह हो गया है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया यह किस ने किया है? लोगों ने कहा नोमान ने। यह करने के बाद नोमान वहां से चले गए। कहीं जा के छिप गए तो आप उनकी तलाश में निकले। बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी तलाश में निकले यहां तक कि उन्हें हज़रत ज़ुबाह बिन्त ज़ुबैर बिन अब्दुल मुतलिब रज़ि के यहाँ छिपा हुआ पाया। जहां वह छिपे हुए थे वहां एक शख़्स ने अपनी उंगली से उनकी तरफ़ इशारा करते हुए ऊंची आवाज़ में कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मुझे कहीं नज़र नहीं आ रहा। बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे वहां से निकाला और फ़रमाया कि यह हरकत तुम ने क्यों की है? तो नोमान ने निवेदन कि हे अल्लाह के रसूल! जिन लोगों ने आप को मेरे बारे में ख़बर दी है कि मैंने यह ज़िब्ह किया, उन्होंने ही मुझे उस पर उकसाया था। उन्होंने ही मुझे कहा था और यह भी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाद में इस का बदला दे देंगे, क़ीमत अदा कर देंगे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात सुन कर नुअमान रज़ि के चेहरे को छुआ, अपना हाथ लगाया और मुस्कुराने लगे और आप ने इस बद्दू को इस ऊंट की क़ीमत अदा दी।

मदीना में जब भी कोई फेरी वाला दाख़िल होता , तो हज़रत नुअमान रज़ि इस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए कोई चीज़ ख़रीद लेते और यह निवेदन करते कि आप के लिए मेरी तरफ़ से तोहफ़ा है। जब इस चीज़ का मालिक हज़रत नुअमान रज़ि से इस की क़ीमत लेने के लिए आता। तो वह उसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आते और निवेदन करते कि उसे उस के माल की क़ीमत अदा कर दें। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते कि क्या तुम ने ये चीज़ मुझे बतौर तोहफ़ा नहीं दी थी तो वह कहते हे रसूलुल्लाह! अल्लाह की क़सम मेरे पास इस चीज़ की अदायगी के लिए कोई रक़म नहीं थी हां मेरा शौक़ था कि अगर वह खाने की चीज़

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

है तो आप उसे खाएं। रखने की चीज़ है तो आप इसे रखें। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराने लगते और इस चीज़ के मालिक को इस की कीमत अदा करने का आदेश फरमाते।

(ख़ुत्बा जुमा सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 13 सितम्बर 2019 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक निहायत मुख़लिस अन्सारी सहाबी थे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि। इन के पिता का नाम था अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल। यह मुनाफ़िक़ों का सरदार था। उसने कोई भी अवसर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ और नुक़्सान पहुंचाने का न छोड़ा।

जंग अहद के अवसर पर पहले तो अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल अपने आदमियों के साथ जंग के लिए निकल पड़ा लेकिन ठीक उहद के दामन में पहुंच कर अपने तीन सौ साथियों सहित वापस हो गया। इस तरह लश्कर की कुल संख्या जो एक हज़ार थी उस के निकल जाने से सिर्फ 700 रह गई।

जंग बनी मुस्तलक़ जो 5 हिजरी में हुई, इस अवसर पर अन्सार तथा मुहाजिरीन के बीच किसी ग़लत फ़हमी की कारण पर क़रीब था कि लड़ाई हो जाती लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ैरमामूली आकर्षक शख़्सियत और हर दो पक्षों के दिल में आप की बेपनाह मुहब्बत के कारण से ऐसा नहीं हुआ। अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल मुनाफ़कीन के रईस भी इस जंग में शामिल था। जब उसे इस बात का इलम हुआ तो वह इस मतभेद को बढ़ाने लग गया और इस ने यहां तक दिया:

لَئِنْ رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ

(अल्मुनाफ़ेक़ून 9)अर्थात मैं जो इज़्ज़त वाला हूँ मुहम्मद को जो नऊज़-बिल्लाह मिन ज़ालिक अपमानित शख़्स हैं मदीना पहुंच कर मदीना से निकाल दूँगा। थोड़ी देर में हज़रत अब्दुल्लाह जो आँहज़रत के निहायत मुख़लिस सहाबी थे, जिनका ज़िक्र हो रहा है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे। हे रसूलुल्लाह! मैं ने सुना है कि आप मेरे बाप की गुस्ताख़ी और फ़ित्ना फैलाने की वजह से इस के क़तल का हुक्म देना चाहते हैं। अगर आप का यही फ़ैसला है तो आप मुझे हुक्म फ़रमाएं मैं अभी अपने बाप का सिर काट कर आप के क़दमों में ला डालता हूँ मगर आप किसी और को ऐसा इरशाद न फ़रमाएं क्योंकि मैं डरता हूँ कि जाहिलियत की कोई रग किसी वक़्त मेरे बदन में जोश मारे और मैं अपने बाप के क़ातिल को कोई नुक़्सान पहुंचा बैठूँ और ख़ुदा की रज़ा चाहता हुआ भी जहन्नुम में जा गिरूं। आप ने उन्हें तसल्ली दी और फ़रमाया कि हमारा हरगिज़ यह इरादा नहीं है बल्कि हम बहरहाल तुम्हारे पिता के साथ नरमी और एहसान का मामला करेंगे। ध्यान योग्य है कि इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबी बिन सलूल रईसुल मुनाफ़कीन के बेटे अब्दुल्लाह रज़ि के साथ किस तरह मुहब्बत तथा दया का मामला किया।

इसी जंग बनी मुस्तलक़ से वापसी के मौक़ा पर उम्माहातुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा पर आरोप लगाया गया जिस का वास्तव में लगाने वाला मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल था। अत: कि कोई अवसर अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल को ज़ख़्मी करने का नहीं छोड़ता। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर अवसर पर उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाह अन्हो के साथ इंतिहाई मुहब्बत और प्रेम का सुलूक फ़रमाया। जब अबी बिन सलूल की मृत्यु हुई तो हज़रत अब्दुल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अपने पिता की नमाज़ जनाज़ा के लिए निवेदन किया। इसी तरह उन्होंने यह भी निवेदन किया कि आप अपनी क़मीस प्रदान फ़रमाएं ताकि वह बतौर कफ़न अपने पिता के लिए इस्तिमाल कर सकें और इस तरह शायद मेरे वालिद से हल्का मामला हो सके तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें कुर्ता प्रदान फ़रमाया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ जनाज़ा पढ़ने लगे तो हज़रत उमर रज़ि ने निवेदन किया कि अल्लाह तआला ने आप को मुनाफ़क़ीन की नमाज़ जनाज़ा से मना किया है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे मना नहीं किया गया बल्कि इख़तियार दिया गया है कि मैं चाहूँ तो उनके लिए इस्तिग़फ़ार करूँ और चाहूँ तो न करूँ। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। फिर जब अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों की नमाज़ जनाज़ा न पढ़ने की साफ मनाही फ़र्मा दी तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनाफ़क़ीन की नमाज़ जनाज़ा पढ़ानी बंद कर दी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबी बिन सलूल के साथ जो मेहरबानी का सुलूक फ़रमाया उस की असल वजह हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाह अन्हो थे,जबकि रिवायत में इस की कोई और कारण वर्णन किए जाते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं: बहरहाल यह शफ़क़त का सुलूक था जो मेरे ख़्याल में तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के कारण से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया था कि बेटे ने जो हर मामले में इस्लाम की ग़ैरत रखी ,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ैरत रखी और अपने ईमान को बचाया और अपने बाप पर सख़्ती भी की तो इसलिए बच्चे की दिलदारी के लिए, बेटे की दिलदारी के लिए या उस की इच्छा की वजह से आप ने क़मीस उतार के दी थी।

(उद्धरित ख़ुतबा जुमअ: सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला 15 नवम्बर 2019 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

''मैं सदैव आश्चर्य से देखता हूँ कि यह अरबी 'नबी' जिसका नाम मुहम्मद है, (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह कैसा सर्वोच्च स्तर का नबी है, इसके महान स्तर की चरम-सीमा की जानकारी सम्भव नहीं और इसके पावन प्रभाव का अनुमान करना मनुष्य का कार्य नहीं। खेद है कि पहचानने का जो ढंग है (उसके अनुसार) उसके स्थान को पहचाना नहीं गया। वह 'तौहीद' (अल्लाह तआला के अद्वैत एवं निराकार होने का सिद्धान्त) जो संसार से लुप्त हो चुकी थी, वही एक पहलवान है जो पुन: उसको दुनिया में लाया। उसने अल्लाह से चरम-सीमा तक प्रेम किया और चरम-सीमा तक मानव जाति की सहानुभूति में उसका हृदय द्रवित हुआ, अत: अल्लाह ने जो उसके हृदय के रहस्यों को जानता था उसको समस्त पैग़म्बरों और सभी भूत-भविष्यकालीन मानवों पर श्रेष्ठता प्रदान की और उसकी मनोकामनाओं को उसके जीवन में ही पूरा किया।''

(हक़ीक़तुल वही, रूहानी ख़ज़ायन भाग-22, , पृष्ठ 118-119)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

(मन्सूर अहमद मसरूर)

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

सिरे दारम फ़िदाए ख़ाके अहमद दिलम हर वक़्त क़ुर्बाने मुहम्मद(स)

फारसी कलाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अजब नूरईस्त दर जाने मुहम्मद(स)
अजब लअलीस्त दर काने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में एक अद्भुत प्रकाश है। मुहम्मद की खान में बहुत ही विचित्र लअल (पद्म) है।

अजब दारम दिले आं नाकसां रा
कि रू ताबन्द अज़ ख़्वाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) मैं उन मूर्खों के हृदय पर आश्चर्य करता हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु वसल्लम के दस्तरख़्वान से मुंह फेरते हैं।

निदानम हीच नफ़से दर दो आलम
के दारद शौकतो शाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) दोनों लोकों में मैं किसी को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सी शान रखता हो।

ख़ुदा ख़ुद सोज़द आँ किरम दनी रा
कि बाशद अज़ अदुव्वाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) ख़ुदा स्वयं उस अधर्म कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मनों में से हो।

अगर ख़्वाही निजात मस्तिए नफ़्स
बया दर ज़ैल-ए-मस्ताने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) यदि तू नफ़्स के नशे मेंचूर होने से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से हो जा।

अगर ख़्वाही कि हक़ गोयद सुनायत
बिशौ अज़ दिल सना ख़्वाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) यदि तू चाहता है कि ख़ुदा तेरी प्रशंसा करे तो दिल की गहराई से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यशोगान करने वाला बन जा।

अगर ख़्वाही दलीले आशिकश बाश
मुहम्मद(स) हसत बुरहाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) यदि तू उसकी सच्चाई का प्रमाण चाहता है तो उसका आशिक बन जा क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही स्वयं मुहम्मद का प्रमाण है।

सिरे दारम फ़िदाए ख़ाके अहमद
दिलम हर वक़्त क़ुर्बाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) मेरा सिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरों की धूल पर न्योछावर है और मेरा दिल हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान रहता है।

दिगर उस्ताद रा नामे नदानम
के ख़्वांदम दर दबिस्ताने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) मैं किसी अन्य उस्ताद का नाम नहीं जानता मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदरसे का पड़ा हुआ हूं।

अला ए दुश्मन-ए-नादान-ओ-बेराह
बतरस अज़ तेग़े बुर्राने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) हे मूर्ख और गुमराह दुश्मन होशियार हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर।

अला ए मुन्किर अज़ शाने मुहम्मद(स)
हम अज़ नूरे नुमायाने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) खबरदार हो जा हे वह व्यक्ति जो मुहम्मद(स) की शान और मुहम्मद(स) के चमकते हुए नूर का इन्कार करने वाला है।

करामत गरचे बेनामो निशान अस्त
बया बंगर ज़े ग़िल्माने मुहम्मद(स)

(अनुवाद) यद्यपि करामत (चमत्कार) अब अप्राप्य है परन्तु तू आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दासों में देख।

❁❁❁

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 13 August 2020 Issue No. 33

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ

"صَلَاۃٌ فِیْ مَسْجِدِیْ ھٰذَا

خَیْرٌ مِنْ اَلْفِ صَلَاۃٍ فِیْمَا سِوَاہُ اِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ"

(صحیح بخاری، کتاب فضل الصّلوۃ فی مکۃ والمدینۃ)

(सहीह बुख़ारी किताब फज़लुस्सलात फी मक्कते वल्मदीना)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

मेरी इस मस्जिद(मस्जिद नबवी) में एक समय की नमाज़ दूसरी मस्जिदों में एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है, सिवाए मस्जिद हराम के।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad